सेठ जमनालाल बजाज

-डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल

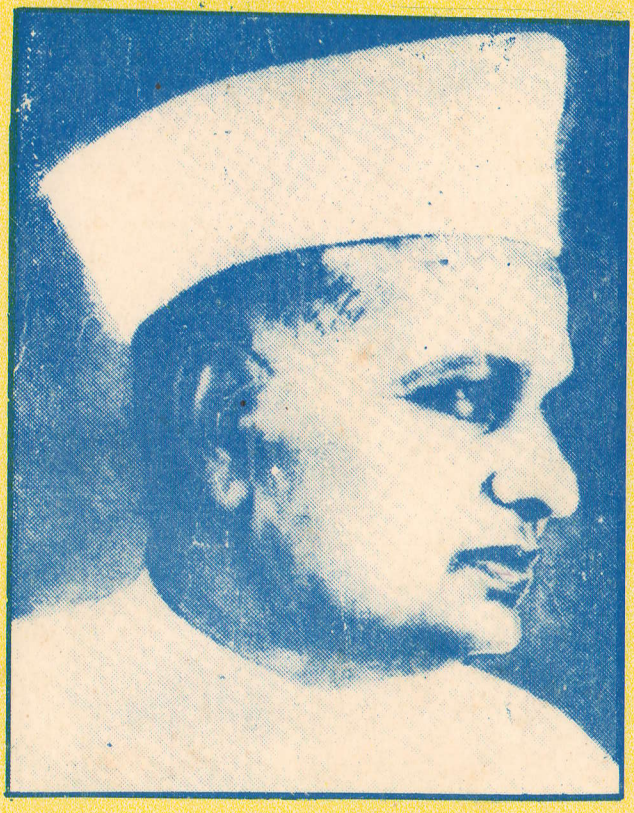

स्वाधीनता आंदोलन के भामाशाह सेठ जमनालाल बजाज

अग्रोहा विकास ट्रस्ट

प्रकाशक:
नरेश कुमार गुप्ता, वरिष्ठ उपाध्यक्ष
अग्रोहा विकास ट्रस्ट
अग्रोहाधाम (हिसार) - 123504
फोन नं0 - 01669-45127

* *
प्रथम संस्करण 2001
मूल्य 10/-
* *

मुद्रक :
पूनम प्रिंटस्, दिल्ली

राष्ट्रभक्त
सेठ जमनालाल बजाज

लेखक :
डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल
प्रथम मेजर रामप्रसाद पोद्दार पुरस्कार से अलंकृत
'रचियता अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल' शोधग्रंथ

अग्रोहा विकास ट्रस्ट
अग्रोहाधाम, अग्रोहा - 125047

प्राक्कथन

डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल के बारे में कुछ लिखना मुझे शोभा नहीं देता। यह उनका आग्रह है कि उनके हम इस लेखन पर मैं अपनी कुछ राय लिखूं। मैं तो आज तक उनके हर कार्य में हाथ बंटाता रहा और आगे बढने का साहस देता रहा, स्वयं अपनी ही कृति की क्या प्रशंसा करूं। मणि अपने आप में स्वयं एक पूर्ण व्यक्तित्व है। जिनके स्वभाव, व्यवहार, वाणी, कार्य, त्याग, वैराग्य, दृढता और लग्न की जितनी भी प्रशंसा की जाये कम होगी। उन्होंने कितना लेखन किया है यह शब्दों में ब्यान करना सम्भव नहीं। वैराग्य लेने के लिए पहले ही मैंने ही उनके 80 किलो लेखन सामग्री (पांडुलिपि) को जलते देखा है। वे बहुत भावुक है। समाज की दी हुई हर चोट ने उनके लेखन को तीखा और सत्य से आपूर किया है। वे जहां भी जाती है अपनी दिव्यता से जनता को मोह लेती है। उनकी यह कृति भी उस व्यक्तित्व और उसके परिवार के प्रति आस्था और विश्वास की प्रतीक है। जानकी देवी बजाज(पत्नी श्री जमनादास बजाज), मदालसा जी और कमला बहन (बेटियां), कमलनयन जैन (पुत्र), श्रीमन्नारायण और रामेश्वरदास नेवटिया (दामाद) आदि से हमारा परिचय ही इस पुस्तक का जन्मदाता है। जिनके दर्शनों का सौभाग्य हमें अनेको बार प्राप्त हुआ है। किसी भी महापुरूष का चरित्र इतने हृदय ग्राति और मार्मिक रूप से शायद ही कभी लिखा गया हो। वे भारतीय संस्कृति की साकार मूर्ति है। मणि भी उनके जीवन से अत्यंत प्रभावित हो कलम लेकर बैठी है। मणि का लेखन, उनके पत्र, उनकी मधुर वाणी के लिए भी लालायित रहते है। पूरे देश और विदेशों में जाकर उसने समाज उत्थान के लिए एक अलग अलख जगाई है। उनका प्रमाज्ञ हृदय में अन्दर जाकर कोने-कोने को झंकृत कर देता है। उनकी यह कृति (सेठ जमनालाल बजाज)भी उनके लेखन की मर्मस्पर्शी रचना है। साधारण सा मानव कैसे महापुरूष बन सकता है। यह उनके जीवन से सीखा जा सकता है। आशा है पाठकों को लागत मूल्य में प्रचार हेतु वितरित यह कृति पसन्द आयेगी। अग्रोहा विकास ट्रस्ट का विशेष रूप से भी आभारी हूं जिसने इसे प्रकाशित कर इस विभूति को जानने का अवसर प्रदान किया है।

-बद्रीप्रसाद अग्रवाल

पूर्व उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन दिल्ली
उपाध्यक्ष अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा
पूर्व अध्यक्ष, मध्य प्रदेश अग्रवाल महासभा
पूर्व अध्यक्ष, जबलपुर महासभा
पूर्व अध्यक्ष, भारतीय अग्रवाल वैश्य महासभा

लेखक की कलम से .....

जब श्री बालेश्वर जी ने कहा कि जमनालाल बजाज के ऊपर एक छोटी पुस्तिका तैयार करनी है जो लोगों की प्रेरणा स्त्रोत बन सके तो अनायास ही मेरा मन उन पर कुछ लिखने को मचल उठा। मैनें बहुत नजदीक से उनके परिवार को देखा है और संगति का लाभ लिया है। श्रीमती कमला बहन नेवटिया मेरी बेटी की ताया सास है उनकी बहिन श्रीमती मदालसा श्रीमन्नारायण के बेटे को मेरी भतीजी ब्याही गई है। उनके दर्शनों को हम दोनों स्वयं वर्धा गए थे। मदालसा जी का सादा जीवन तथा भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत रहन सहन मुझे अत्यंत प्रभावित कर गया। उन्होनें बजाज बाडी के दर्शन कराए। वह स्थान देखा जहां बड़े-बड़े नेता गांधी, सुभाष, नेहरू, पटेल मंत्रणा करते थे। लक्ष्मीनारायणजी का मंदिर भी देखा जहां हरिजन प्रवेश पर लोगों ने जमनालाल बजाज को बिरादरी से पृथक कर दिया था। श्रीमती जानकी देवी बजाज के दर्शन किए उनके चरण स्पर्श कर मैं धन्य हो उठी थी। कुछ काल उपरांत ही उनका शरीर शांत हो गया। मदालसा जी ने ही मुझे आचार्य बिनोवा भावे के दर्शन कराए। उन्हें मैनें एक भजन सुनाया था "जाके प्रिय न राम वैदेही" उसके बाद हम वर्धा आश्रम से वापस आ गए थे। आज जब जमनालाल बजाज पर मेरी लेखिनी उठी तो अनायास ही इन बातों का स्मरण हो आया।

पता नहीं कितना बन पाया कितना नहीं पर मैनें अपनी तरफ से पूरा प्रयास किया है कि उनका संपूर्ण चरित्र उभर कर सामने आये। इसमें जो कुछ छूट गया हो वह तो मेरी ही त्रुटि है, जो अच्छा लगे वह सब इन लेखकों का वैभव है जिनके विचार लेकर यह लघु जीवन चरित्र तैयार हुआ है इसमें मेरा तो कुछ भी नहीं है। पवनार आश्रम का वह संक्षिप्त प्रवास ही इस पुस्तक का कारण बना यह पुस्तक उन्हीं को समर्पित है।

जीवन कालोनी, बलदेव बाग
जबलपुर (म.प्र.)
फोन नं0 - 0761-518664

चैत्र शूदी पूर्णिमा २०५७

-डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल

राष्ट्रीय आंदोलन के भामाशाह श्री जमनालाल बजाज उन महापुरूषों में से थे जिनसे आज संपूर्ण राष्ट्र गौरवान्वित है। अपने जीवन काल में उन्होनें तन-मन-धन से मानवसेवा और परोपकार को ही जीवन का मूलमंत्र मान लिया था। जीवन पर्यन्त उन्होनें महात्मा गांधी के साथ उन हजारों कार्यकर्ताओं और राष्ट्रीय नेताओं का भी ध्यान रखा, जो राष्ट्रीय आंदोलन में व्यस्त होने के कारण पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन करने में असमर्थ थे। यह सहायता किसी मान, सम्मान की इच्छा से नहीं दी जाती थी अपितु गुप्त दान के तरीके से दी जाती थी जिनकी खबर स्वयं प्राप्तकर्ता को नहीं होती थी। अनेक विधवाओं के आंसू पोंछे कितने लोगों के जीवन में शिक्षा का प्रकाश फैलाया, कितने प्राकृतिक विपदाग्रस्त लोगों की मदद की, इसकी जानकारी उनके परिवारवालो को तो क्या, स्वयं उनको भी नहीं थी। बापू उन्हें अपना "कामधेनु" कहते थे, और कहते थे - "मेरी एक भी ऐसी प्रवृत्ति नहीं थी जिसमें उन्होनें दिल से पूरी-पूरी सहायता न की हो और वे सभी कीमती साबित हुई। मुझे आर्थिक सहायता बराबर मिलती है या नहीं इसकी फिक्र उन्हें बराबर रहती थी।" पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जमनालाल जी को स्विट्जरलैंड में पढ़ रही इंदिरा गांधी की स्कूल फीस भिजवाने को पत्र लिखा था। "पहले पचास पौंड शुरू में जनवरी में भेजे जाए फिर शुरू मार्च में, इस तरह से यह रू. सीधे उनको स्विट्जरलैंड भेजा जा सकता है" जमनालाल ने कई वर्षों तक यह मदद जारी रखी। तभी तो इंदिरा गांधी ने उन्हें कांग्रेस का भामाशाह कहा था।

गोदनामा

सेठ बच्छराज बजाज जी कहने को तो चार भाई थे लेकिन चारो भाई नि:सन्तान ही थे। बच्छराज जी का जन्मस्थान तो काशी का वास था, पर व्यापार व्यवसाय के कारण वह वर्धा चले गए थे। वहीं उन्होनें रामधनदास नामक पुत्र को गोद ले लिया था। विधाता की मार से उनका यह पुत्र भी शादी के बाद चल बसा। सीकर की तपती धूप में गाड़ी में अपनी पत्नी सद्दी बाई तथा विधवा बहू बसन्ती देवी के साथ अपनी मातृभूमि काशी की ओर चले, तो उनके मन में एक ही ख्याल था वंश को चलाने के लिए गोद लेना ही पड़ेगा। 1894 का वह जून का महीना था। तपती गर्मी में वह अपनी पत्नी लक्ष्मीबाई के साथ पुत्र की तलाश में अपने गांव काशी गए थे। यहां आए कुछ दिन ही हुए थे कि सद्दी बाई ने अपने परिचित कनीराम की पत्नी बिरधी बाई के सामने अपनी व्यथा रखते हुए उनसे पुत्र की इच्छा प्रकट की। संयोग से कनीराम जी का पुत्र "जमन" उस समय चार वर्ष का था। बच्छराज जी की विनती से पिघल कर कनीराम जी ने अपने हृदय के टुकड़े को उनकी गोद में डाल दिया। सद्दीबाई की सूनी गोद हरी भरी हुई बच्छराज जी ने अपने आसूं पोछे सद्दीबाई ने जमन को अपने हृदय से लगाकर अपने मातृत्व भी भूख तृप्त कर ली।

बच्छराम जी ने कनीराम जी को कुछ देना चाहा किंतु कनीराम जी ने पुत्र के बदले कुछ लेना अस्वीकार कर दिया। उन्होनें कहा कुछ देना ही है तो इस गांव में पानी नहीं है एक कुंआ बनवा दीजिए ताकि महिलाओं को आराम हो जाए। बच्छराज जी ने तुरंत एक कुंआ तैयार करने की आज्ञा दी। आज भी वह कुंआ गांव वासियों की पानी की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। जमनालाल जी इस समय तक साढे चार वर्ष के हो चुके थे।

शिक्षा दीक्षा

वर्धा आने के दो वर्ष बाद जमनालाल जी को एक मराठी प्राइमरी स्कूल में प्रवेश मिल गया। लगातार चार साल तक वह इसी स्कूल में पढ़े। चार साल में उन्होनें अक्षरज्ञान तथा हिसाब किताब करना सीख लिया था। पिता ने यहीं पर पढ़ाई रोक दी। उनके मत से व्यापार व्यवसाय चलाने के लिए इतनी शिक्षा पर्याप्त थी। इस बीच बच्छराज जी के अंग्रेजों से संबंध बढ़ते जा रहे थे इसलिए पुत्र को अंग्रेजी की शिक्षा दिलवाना उन्होनें अनिवार्य समझा। तीन महीने तक अंग्रेजी भाषा की कोचिंग लेकर जमनालाल जी ने आंग्ल भाषा पर अपना अधिकार जमा लिया। बच्छराम जी ने उन्हें गद्दी पर बैठकर व्यवसाय देखने की इजाजत दी और व्यापार में उनकी रूचि जगाने के लिए हर संभव उपाय किए लेकिन जमनालाल जी का मन व्यापार में नहीं लगता था। वह जमनालाल जी को प्रतिदिन 1 रू. जेब खर्च देते थे, उसी जेब खर्चे से बची रकम को उन्होनें ''हिंद केसरी'' पत्र को दान कर दिया था।

विवाह

सद्दीबाई के घर में अक्सर साधू संत आते रहते थे। जमनालाल जी का बचपन इन्हीं साधू संतो की संगति में बीतता था। धन के प्रति उन्हें कोई मोह प्रारंभ से ही नहीं था। साधू संतो के जीवन से उन्हें वैराग्य, ज्ञान और जीवन की सार्थकता का अनुभव हो चुका था। लेकिन बच्छराज जी को जमनालाल जी के इन संस्कारों से कोई मतलब नहीं था। वे तो अपना वंश चलाने वाला वारिस चाहते थे अत: जमनालाल जी को उन्होनें काफी बंदिश में ही रखा। उन्हें क्रोध बहुत आता था, क्रोध में वह क्या कह जाएं इसका उन्हें ध्यान नहीं रहता था। जमनालाल जी चुपचाप उनका क्रोध पी जाते थे।

ग्यारह वर्ष की अवस्था में उनके विवाह की बातचीत आई। सद्दीबाई ने कहा मुझे सुंदर बहू नहीं चाहिए। मैं बहुत सुंदर थी तो क्या हुआ, निपूती रही, बसंती बहुत सुंदर है तो क्या हुआ पति को ही खो बैठी, मुझे तो ऐसी बहू चाहिए जो हमारा वंश चला सके, लेकिन बच्छराज जी को तो सुंदर बहू चाहिए थी। भानीराम जी द्वारा लाया रिश्ता पेंडिंग में पड़ा रहा।

जमनालाल जी का मन तो धार्मिक अनुष्ठान और देश की गतिविधियों में अधिक रहता था। बच्छराज जी को यह बात बहुत अखरती थी कि जिस लड़के को वह अपना वारिस बनाकर लाए थे, वह व्यापार से अधिक अखबार में अपना मन लगाता है। लिहाजा उन्होंने उसकी शादी कर देना ही उचित समझा। सद्दीबाई तो तैयार थी ही, बच्छराज की सहमति पाते

ही भानीराम जी ने आठ वर्ष की जानकीबाई का सम्बन्ध ग्यारह वर्ष के जमनालाल बजाज से तय कर दिया।

सद्दीबाई को यह सुख देखना बदा नहीं था। जमनालाल जी की शादी के पूर्व ही वह भगवान को प्यारी हो गई। शादी के नौ दिन बाद जमनालाल जी के छोटे भाई बदरी भी टायफायड की अल्पकालिक बीमारी में चल बसे। शादी की खुशी-खुशी सी न रही। बच्छराज जी की विधवा बहू वांसती देवी जमनालाल और जानकी देवी को बहुत प्यार करती थी लेकिन उन्हें भी यह सुख अधिक दिन तक न फला। गांव में अचानक प्लेग फैला और वांसती बाई प्लेग की चपेट में आकर चल बसीं।

जमनालाल के जीवन पर इन घटनाओं का बहुत गहरा असर पड़ा। जीवन मृत्यु, सुख-दुख, जीवन की निरर्थकता उन्हें संसार से विमुख करती चली गई। उनका मन बैरागी हो गया और वे संयास लेने की सोचने लगे। इस समय उनके बचपन के साथी उनके मामा विरधीचंद पोद्दार ने उन्हें बहुत सम्हाला। फिर भी जमनालाल का मन घर संसार में नहीं लगा। बात-बात पर बच्छराज जी उन्हें गालियाँ देते थे। जमनालाल जी के मन में उनकी डॉट का बहुत बुरा असर पड़ता था। एक दिन बहुत छोटी सी बात पर बच्छराज जो ने उन्हें बहुत कड़ी बात कह दी।

बात यों थी कि कहीं शादी में जाना था। उस समय के रिवाज के अनुसार शादी विवाह में मर्द लोग भी गहने पहनते थे। बच्छराज जी ने जमनालाल से कहा कि गहने पहन लो, उन्होनें गहने पहनना स्वीकार नहीं किया। बच्छराज जी को इस बात पर इतना क्रोध आया कि वह कहनी न कहनी सब कह बैठे - ''तुझे पैसे की क्या कद्र? सब कुछ बैठे बिठाए मिल गया है, इसलिए मनमानी करता है।'' कभी हाथ से कमाया होता तो पता चलता कि कमाई कैसे की जाती है। मुझसे ही गलती हुई जो गोद ले आया, सोचा था कोई वंश चलाने वाला मिलेगा जो बाप दादे का नाम रोशन करेगा, पर तेरे तो लच्छन ही कुछ और हैं, सोचता है दादाजी मरेंगे तो सब मुझे ही मिलेगा, पर ये न सोचना कि मैं सब तुझे दे जाऊंगा, मैं सब दान कर जाऊंगा, तुझे एक फुटी कौंड़ी भी नहीं दूंगा। मन में आए तो नालिश कर लेना ये कहते हुए वह पैर पटकते हुए चले गए।

जमनालाल जी के मन में उनके क्रोध का बहुत गहरा असर पड़ा। उन्होनें अपने दादा को एक पत्र लिखा और उसी दिन घर छोड़कर चले गए। पत्र में लिखा -

सिद्व श्री वर्धा शुभस्थान पूज्य श्री बच्छराज रामधनदास से चि. जमन का चरण स्पर्श।..... आज आप मुझ पर निहायत खफा हो गए, सो कोई चिंता नहीं। श्री ठाकुरजी की मर्जी। मैं गोद लिया हुआ था इसलिए आपने ऐसा कहा, पर आपका कुछ कसूर नहीं, कसूर उनका है जिन्होनें मुझे गोद दिया। आपने कहा नालिश करो। सो ठीक, पर मेरा आप पर कोई कर्ज तो है नहीं। आपका कमाया हुआ पैसा है। आपकी खुशी हो सो करें। मेरा आप पर कोई अधिकार नहीं है। आज तक मेरे बाबत या मेरे लिए जो कुछ खर्च हुआ सो हुआ। आज के बाद आपसे एक छदाम कौड़ी मैं लूंगा नहीं और न ही मंगवाऊंगा। आप अपने मन में किसी तरह का कोई ख्याल न करें। आपकी तरफ, आज से मेरा किसी तरह का भी हक

नहीं रहा है। श्री लक्ष्मीनारायण जी से मेरी अर्जी है कि आपका शरीर ठीक रखें और आपको भी 20-25 वर्षों तक कायम रखें। मैं जहां जाऊंगा वहीं से आपके लिए ठाकुर जी से इस प्रकार की विनती करता रहूंगा। मुझसे आज तक जो कसूर हुआ वह माफ करें। और आपके मन में यदि हो कि सब पैसों के साथी हैं और मैं भी पैसों के लिए आपकी सेवा करता हूँ सो मेरे मन में तो आपके पैसों की चाह बिल्कुल नहीं है और ठाकुर जी करेंगे तो आपके पैसे की इच्छा भविष्य में भी मन में आवेगी नहीं, क्योंकि मेरी तकदीर मेरे साथ है। और पैसे मेरे पास हो भी तो मैं क्या करूंगा? मुझे तो पैसे की चाह है ही नहीं। आपकी दया से ठाकुर जी का भजन सुमिरन जो कुछ होगा करूंगा जिससे इस जन्म में भी सुख पाऊं और अगले जन्म में भी। आप प्रसन्नचित रहें किसी किस्म की फ्रिक न करें। सब झूठे नाते हैं, न कोई किसी का पोता है, न कोई किसी का दादा। सब अपने-अपने सुख के साथी हैं। सब झूठा पसारा है। आप अभी तक मायाजाल में फंसे रहे हैं, मैं आज आपके उपदेश से मायाजाल से छूट गया। आगे श्री भगवान संसार से बचावें।

अपने मन में आप इस तरह कदापि न समझें कि यह हमारे ऊपर नालिश फरियाद करेगा। मैनें अपनी राजी खुशी से टिकट लगाकर सही कर दी है कि आप पर अथवा स्टेट, पैसे-रूपए, गहना गाठि आदि किसी सामान पर मेरा कतई हक नहीं रहा है। मेरे हाथ को कोई कर्ज नहीं है, न किसी का कोई देना बाकी है। अन्य समाचार कुछ है नहीं। समाचार तो बहुत है पर मेरे से सब लिखे नहीं जाते। संवत 1964 मिती बैसाख कृष्ण 2 मंगलवार पूज्य श्री दादाजी से जमन का चरण स्पर्श। बहुत-बहुत सम्मान सहित। आपकी तरफ मेरा कोई लेन देन नहीं रहा है। श्री ठाकुरजी के मंदिर का काम बराबर चलावें। आपसे दान धर्म जो भी बने, सो खूब करते जावें। ब्राह्मण साधू को गाली बिल्कुल न दें और किसी को भी हाथ का उत्तर दें, मुंह का उत्तर नहीं। ज्यादा क्या लिखूं? इतने ही में समझ लें। और आपकी कोई चीज साथ नहीं लूंगा। सब यहीं छोड़ जाता हूँ। सिर्फ अंग पर कपड़ा पहने हूँ।"

जमनालाल जी का पत्र पढ़ते ही बच्छराज जी के हाथों से तोते उड़ गए। भागे गए स्टेशन और जमनालाल जी को वापस लौटा लाए। जमनालाल जी के पत्र ने उनका हृदय परिवर्तन कर दिया था। उन्होंने लक्ष्मीनारायण के मंदिर में एक लाख रू. दान देकर उसे पूर्ण करवाया। एक स्कूल को भी काफी बड़ी धनराशि दान में दी। अंत में 17 वर्ष की अवस्था में जमनालाल जी को निराधार छोड़ वह भी परलोक सिधार गए।

देश प्रेम का बीजारोपण

दादाजी के कटु व्यवहार से क्षुब्ध जमनालाल जी जब संसार से पलायन की बात सोच रहे थे उसी समय पेशे से वकील श्रीकृष्ण दास जाजू ने उनकी चिंतन की धारा देश प्रेम और समाजसेवा की ओर उन्मुख कर दी। श्रीकृष्णदास जाजू बड़े प्रभावशाली, साधुमना, शिक्षाप्रेमी सज्जन पुरूष थे। उनके अकाटय तर्को के आग जमनलाल का कच्चा मन टिक न सका उन्होनें

कहा "अपने देश में ही सब कुछ करो। क्या कुछ नहीं है यहाँ? ग़रीबी है, गुलामी है, गरीबों की सेवा करो, देशसेवा और समाजसेवा किसी पूजा से कम नहीं है। इसी को अपनी कर्मभूमि बनाओ।" अपने प्रेरणास्पद विचारों से, जाजूजी ने जमनलाल को अपना अनुगामी बना लिया। 1906 में जब कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो जाजू जी उन्हें कलकता ले गए। जिन महान विचारकों, दार्शनिकों को अब तक वह किताबों में पढ़ते आए थे - आज उनके दर्शन पाकर उनका जीवन धन्य हो उठा। बाल गंगाधर तिलक, दादाभाई नौरोजी, जगदीशचंद्र बसु, कवि गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर, महामना मदनमोहन मालवीय को सुनते और जानने का मौका मिला। यहीं उनकी भेंट महात्मा गांधी से हुई और उन्होनें स्वदेशी की शपथ ले ली। उस समय लोकमान्य तिलक 'मराठा केसरी' नाम से अखबार निकालते थे। सन् 1906 में माधवराव सप्रे ने नागपुर से 'हिंद केसरी' निकालने का संकल्प लिया। उन्होनें देशवासियों को आह्वान किया कि वे इस आयोजन के लिए दिल खोलकर चंदा दे। जमनालाल ने भी यह आवाज सुनी और उन्होनें अपने जेब खर्च से बचाए हुए 100/- रू. हिंद केसरी को अपने जीवन का प्रथम अनुदान भेजा। उन्होनें कहा कि जीवन में मैनें लाखों रू. दान किए हैं लेकिन जितना आनंद मुझे 100/- रू. के इस अनुदान से प्राप्त हुआ वह जीवन में फिर कभी नहीं हुआ।

व्यापार व्यवसाय

17 वर्ष की उम्र में सेठ बच्छराज जी उन्हें बेसहारा छोड़कर चले गए तो कारोबार उन्हें सम्हालना ही पड़ा। व्यापार में आते ही उनका संबंध ससून परिवार, टाटा, बिड़ला परिवार, डालमिया परिवार, बिन्नी परिवार तथा रूइया परिवार जैसे बड़े व्यवसायियों से हुआ। उनके संपर्क से उन्होनें बच्छराज जी का व्यापार बढ़ाया और दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते चले गए। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी नगर में उन्होनें एक शुगर मिल की स्थापना कर उद्योग के क्षेत्र में भी अपना हाथ बढ़ाया। इस मिल का नाम उन्होनें अपने परिवार पर न रखकर देश के नाम पर रखा 'हिंदुस्तान शुगर मिल'।

गांधीजी के परम भक्त लाला जीवनलाल मोतीचंद की भागीदारी में उन्होनें मुकुंद आयरन एंड स्टील वर्क्स का संचालन भी सम्हाला। व्यापार - उद्योग में वह ईमानदारी और सच्चाई को प्राथमिकता देते थे। इसके लिए उन्होनें एक आचार संहिता बनाई हुई थी, जिसका पालन बड़ी कड़ाई से होता था। उनकी बही में लिखा होता था "श्री लक्ष्मी जूँ सू प्रार्थना है कि सद्बुद्धि देवे तथा सत्य के साथ बेपार करन की तथा रूजगार मॉही लाभ होवे जी को देश तथा दुःखी जनता के कार्य मॉही लागन की बुद्धि देवें।" और लक्ष्मी जी ने उन्हें उनकी बुद्धि सदा विवेक और सत्य की ओर ही मोड़ी।

उन दिनों रूई के व्यापारी तोल बढ़ाने के लिए रूई गीली कर देते थे। जमनालाल जी के मुनीमों और एजेंटो ने भी यही धांधली करनी प्रारंभ कर दी। जमनलाल जी को जब पता चला तो उन्होनें मुनीमों और एजेंटो को भारी डॉट पिलाई और भविष्य में ऐसा न करने की हिदायत दी। मुनीमों ने कहा व्यापार घाटे में जाएगा, कंपनी बैठ जाएगी, पर जमनलाल जी ने कहा

"घाटा होता है तो होने दो, पर हम सच्चाई और ईमानदारी को नहीं छोड़ सकते।" उनकी इस दृढ़ता का ही परिणाम था कि लोग ज्यादा दाम देकर भी उनकी कंपनी का माल लेते थे क्योंकि माल खरा होता था। जमनलाल जी को कभी घाटा नहीं हुआ। वह जीवन भर सट्टा नहीं खेले।

एक बार सत्याग्रह के सिलसिले में उन्हें जेल जाना पड़ा। जेल से वापस आए तो पता चला कि उनके सहकर्मियों ने 75000/- रू. टैक्स का बचा लिया है। उन्हें बहुत दु:ख हुआ। वे गांधी जी के पास गए और पूछा कि क्या करें। गांधी जी ने कहा इस धन को परमार्थ में लगाओ। उन्होनें तुरंत 75000/- का चेक काटकर गांधी जी को सौंप दिया।

गौसेवा के प्रति जमनालाल जी के मन में भारी प्रेम था। अपने इसी प्रेम के कारण उन्होनें वनस्पति घी की भी फैक्ट्री कभी नहीं डाली। हॉलाकि इसमें उन्हें भारी लाभ हो सकता था। स्वदेशी की शपथ लिए थे अत: खद्दर ही उनका एकमात्र उपयोगी वस्त्र था। उस समय अनेक कपड़ा मिलो के ठोस वा लाभकारी प्रस्ताव आए पर जमनालाल ने जीवन भर कपड़ा मिलो की तरफ ध्यान नहीं दिया। उद्योग धंधो में उनका विचार मजदूरों और मालिकों के बीच समन्वय स्थापित करने पर अधिक था। वे कहा करते थे कि मजदूरों की दशा सुधारनी चाहिए लेकिन उद्योग को नुकसान पहुंचा कर नहीं क्योंकि उद्योग को नुकसान होगा तो मजदूर का जीवन आधार ही टूट जाएगा। मजदूर और मालिकों में परस्पर मित्र और भाई का व्यवहार होना चाहिए ताकि दोनों में समन्वय बना रहे।

परिवार के साथ

सत्रह वर्ष की आयु में जिस कंधे पर परिवार का भार आ जाए वह कितना मजबूत होगा इसकी कल्पना तो वही कर सकता है जो स्वयं भुक्तभोगी हो। जमनालाल जी का साथ देने उनके बड़े भाई माधवलाल उनके साथ उनकी मदद को आ गए थे, लेकिन भाग्य ने उनका भी साथ नहीं दिया। कुछ ही दिनों बाद मियादी बुखार में वह भी चल बसे। जमनालाल जी इस धक्के को सह न सके। बुरी तरह बीमार होकर उन्होनें खाट पकड़ ली, लेकिन जानकी देवी की सेवा ने उन्हें उस धक्के से उबारा। वे पुन: कर्मयोगी बन काम में जुट गए। वर्धा में ही उन्होनें मारवाड़ी विद्यार्थी गृह और मारवाड़ी हाई स्कूल की स्थापना की। उनकी सेवाओं से प्रसन्न मात्र 18 वर्ष की उम्र में उन्हे 'आनरेरी मजिस्ट्रेट बना दिया गया'

1902 में उनका विवाह श्रीमती जानकी देवी के साथ हुआ था। 1912 में उनके घर में प्रथम बेटी कमलाबाई ने जन्म लिया। इस तरह सिद्धी बाई की लालसा 'कि उन्हें ऐसी बहू चाहिए जो वंश चलावे' पूरी हुई। कमला के जन्मोत्सव पर जमनालाल ने खूब उत्सव मनाया। बच्छराज जी के परिवार में कई पीढ़ियों बाद प्रथम संतान हुई थी, जमनालाल जी ने दान देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। 1915 में प्रथम बेटे कमलनयन का जन्म हुआ और इस प्रकार यह परिवार फलने फूलने लगा।

घर में जानकी देवी हर रोज सुबह पति के पांव धोकर चरणोदक लिया करती थी और

पति की जूठी थाली में ही भोजन करना अपना धर्म समझती थीं। जमनालाल जी तो साधू स्वभाव के आदमी थे उन्हें यह सब परंपरा पंसद नहीं थी। एक बार उन्होनें जानकी देवी को समझाते हुए कहा कि तुम जूठी थाली में खाना छोड़ दो यह तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है और तुम जो रोज मेरा चरणोदक लिया करती हो यह भी छोड़ दो। जानकी देवी ने उनकी एक आज्ञा तो मान ली - लेकिन चरणोदक लेना आखिरी दम तक नहीं छोड़ा। पति की मर्जी ही उनकी मर्जी थी। उन्होनें हर तरह से अपने को उनके ही सांचे में ढाल लिया था।

एक दिन घर में कुछ मेहमान आए। उनमें से एक चांदी की करधनी पहने हुए था। जानकी देवी ने सोचा उनके घर में तो कई सोने की करधनी रखी हुई हैं। उन्होनें जमनालाल से कहा "आप भी एक सोने की तागड़ी पहन लो" जमनालाल को तो अपना वह वक्त याद आ गया, जब इसी गहने पहनने की बात को लेकर उनका अपने बाबा से झगड़ा हो गया था। उन्होनें जानकी देवी को उत्तर देते हुए कहा - सोना तो भगवान का रूप है, उसे कमर के नीचे कैसे पहना जा सकता है? वैसे भी बापू का कहना है कि सोना कलि का रूप है दूसरों में ईर्ष्या पैदा करता है, चोरी का डर बना रहता है ब्याज का नुकसान होता है। मैं तो कहता हूँ जानकी तुम भी गहने उतार दो।

पति की आज्ञाकारिणी जानकी देवी ने न चाहते हुए भी इस आज्ञा का पालन किया। रोते-रोते उन्होनें शरीर के सारे जेवर उतार दिए। आखिर में पांव की कड़ी ही बाकी रह गई, वे बोली "यह कड़ी रहने दूँ? यह तो गरीब से गरीब औरत भी पहनती है, जमनालाल जी ने कोई उत्तर नहीं दिया जानकी देवी ने वह कड़ी भी उतार दी। उसके बाद घर में जेवर पहनना बंद हो गया। उस समय परिवार में पर्दे का चलन था। जमनालाल जी ने घर से पर्दा खत्म करवाया। विदेशी वस्त्रों की होली जला दी। घर में सभी चर्खा कातते थे।" खादी पहनना अनिवार्य था। जानकी देवी पूरी तरह जमनालाल जी के रंग में रंगी थी। परिवार के ताने उलाहने की परवाह न करते हुए उन्होनें पति की आज्ञानुसार सादा जीवन अपना लिया। बच्चे भी उसी रंग में रंग गए।

देश में स्वदेशी आंदोलन चल रहा था जमनालाल ने जानकी देवी से कहा, विलायती कपड़ा राक्षस के रूप में अपने देश पर छाया हुआ है, इस पाप को हिंदुस्तान से निकालना है। अपने घर में एक भी विदेशी कपड़ा न रहे। जानकी देवी ने कहा - "जलाते क्यो हो? गरीबों को बांट दो" पर जमनालाल जी ने कहा, यह तो वैसा ही हुआ कि अपना पाप दूसरों को पहना दिया। पाप तो जलाने की चीज है, पाप कैसे बॉटा जा सकता है? विदेशी कपड़ों की तो होली ही जलेगी। सात दिन तक घर में छोटे बड़े कपड़े निकलते रहे। बच्चों ने भी अपने-अपने कपड़े निकाल कर अग्नि को भेंट किए।

गांधी जी से मुलाकात

1915 में गांधी जी भारत आए। अहमदाबाद में उन्होनें एक छोटा सा आश्रम खोला। जमनालाल जी कई बार उस आश्रम में गए। वे वहां सुबह शाम की प्रार्थना में भी शामिल होते।

गांधीजी से व्यक्तिगत पहचान भी बढ़ी। जमनालाल जी ने देखा कि गांधीजी की कथनी करनी में कोई अंतर नहीं है। यहीं से उन्होनें भी अपना जीवन गांधी जी के विचारों के अनुसार ढालने का संकल्प लिया। युवावस्था में ही उन्होंने साधू जीवन को अपनी लिया। अपना खर्च उन्होनें 500 रू. तक में सीमित कर लिया। यात्रा, कर्मचारी, आदि सभी खर्च इनमें रहते थे। मुनीमों से भी कहते थे कि व्यर्थ खर्च न करो। लेकिन दान देने में लाखों का खर्च करने में कभी न हिचकते थे।

जमनालाल जी ने मन से गांधी जी को अपना पिता मान लिया था। वे चाहते थे कि गांधी जी वर्धा में आकर रहें, उन्होनें गांधी जी से आग्रह भी किया लेकिन गांधी जी नहीं माने, फिर भी जमनालाल की भक्ती में कोई कमी नहीं आई। व्यवसाय जगत के साथ-साथ वे राजनीति से भी जुड़ गए। गांधी जी ने उन्हें पूरी तरह अपना पांचवा पुत्र स्वीकार कर लिया था। 1921 में जमनालाल जी ने वर्धा में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की और विनोबा जी को अपना गुरू मानकर उन्हें वर्धा ले आए। विनोबा जी साक्षात गांधी जी की प्रतिमूर्ति थे, उनके साथ उन्होंने उन्हें दान से ज्यादा जीवन में त्याग की भावना का प्रत्यारोपण किया और जमनालाल जी संपूर्ण मन से देशभक्त बन गए।

राजनीति में प्रवेश

कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में जमनालाल जी को कांग्रेस पार्टी का कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया और आजीवन वे इस पद का भार कर्मठतापूर्वक निर्वहन करते रहे। यहीं पर गांधी जी के पंचम पुत्र बनकर उन्होनें गांधीजी के असहयोग आंदोलन में खुलकर भाग लिया। गांधी जी ने छात्रों, अध्यापकों और वकीलों का खासतौर पर आंदोलन में भाग लेने का आह्वान किया। जमनालाल जी ने तुरंत आंदोलन से संबंध रखने वाले मामले उठा लिए। इससे उन्हें काफी नुकसान भी उठाना पड़ा, लेकिन वे अपने निर्णय पर अडिग रहे। उन्होनें अपने परिवार के तलवार, बंदूक, दूसरे शस्त्रों के लायसेंस भी अंग्रेज सरकार को वापस लौटा दिए।

वकीलों को यह भय था कि अगर वे असहयोग आंदोलन में जुट जाएंगे तो उनके परिवार का भरण पोषण कौन करेगा? गांधी जी ने इस प्रकार के परिवारों की सहायता के लिए एक करोड़ रू. का "स्वराज कोष" स्थापित करने की अपील की। जमनालाल जी ने इस कोष में एक लाख रू. दान दिया और आगे भी दान की आवश्यकता को देखते हुए पुन: एक लाख का दान दिया। उन्होनें यह महसूस किया कि सत्याग्रहियों को जेल चले जाने पर परिवार की महिलाओं को बड़ा कष्ट होता है। वर्धा में एक महिला आश्रम की स्थापना की जिसमें निराश्रित महिलाएं शरण पाती थी। जमनालाल के इस योगदान की प्रशंसा करते हुए **"यंग इंडिया" ने लिखा "जब तक भारत के पास जमनालाल जैसे बेटे हैं उसे अपनी आजादी और गौरव पुन: प्राप्त करने में किसी तरह की निराशा नहीं होनी चाहिए।"**

अंग्रेजों की कुछ बातों से तथा उनके अपमानजक व्यवहारों से जमनालाल जी को अंग्रेजों से नफरत होने लगी थी। गांधी जी के सत्संग के कारण मिसेज नायडू, नेकीराम शर्मा,

देवीप्रसाद खेतान जैसे अंग्रेजों की खिलाफत करने वाले व्यक्तित्व उनके यहां घर पर ही ठहरते थे। तत्कालीन कमिश्नर "मास्किंग" को इसका पता चला। उसने तुरंत जमनालाल जी को बुलाया और पूछा कि क्या यह सच है कि आपके यहाँ अंग्रेजी राज की खिलाफत करने वाले लोग ठहरते हैं? जमनालाल जी उत्तर दिया - हाँ ठहरते हैं। उसने कहा - आपको मालूम है ये लोग ब्रिटिश सरकार के खिलाफ है ? जमनालाल जी का उत्तर था - वे मेरे यहाँ ठहरते हैं मुझे उनके राजनीतिक विचारो से कोई सरोकार नहीं है। वे हमारे पुराने साथी हैं। मास्किंग ने कहा - आपको इन सबो से संबंध खत्म करने पड़ेंगे। जमनलाल जी ने कहा - गांधीजी मेरे बुजुर्ग है उनसे मैं संबंध नहीं तोड़ सकता। मास्किंग ने धमकी दी- तुम्हारे स्कूल की इमारत का उद्घाटन चीफ कमिश्नर नहीं करेंगे। जमनलाल जी ने कहा वे नहीं आना चाहें तो मैं क्या कर सकता हूँ और वे उठकर चले आए। इस तरह की घटनाओं ने उन्हें राजनिति में और सक्रिय कर दिया। परिणाम स्वरूप 1914 के रोडा कांड जिसमें विदेशियों के शस्त्र-अस्त्र कलकत्ता पोर्ट से क्रांतिकारियों ने गायब कर दिए थे उनमें गिरफ्तार मारवाड़ी भाईयों की सराहना करते हुए जमनालाल बजाज पहले मारवाड़ी थे जिन्होनें उनका उत्साह बढ़ाया यहां तक कि संभावित कारावास के उपलक्ष्य में मिठाई मगांकर बाँटी। उनका यह कार्य उस समय को देखते हुए अत्यंत दुस्साहसपूर्ण माना गया था।

स्वदेशी आंदोलन

गांधीजी से जमनालाल जी की भेंट 1915 में हुई। 1920 में जमनालाल जी गांधी जी के पांचवे पुत्र के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार में उन्होनें सर्वप्रथम अपना योगदान दिया। उन्होनें उस वक्त लगभग 20 हजार की कीमत के कपड़े जलवाये। यह होली कमलनयन बजाज के हाथों जलाई गई। जमनालाल जी उस समय दौरे पर थे। उन्होनें जानकीदेवी बजाज को पत्र लिखा 'न तो मैं, न तुम ही विदेशी कपड़ा प्रयोग में लावोगी। हमारे सारे परिवार को सादा रहना चाहिए, खद्दर पहनना चाहिए तुम इस बात का ख्याल रखना कि हमारे घर के मंदिर में भी विदेशी कपड़ा न आने पावे। जमनालाल ने घूम-घूम कर व्यापारियों को स्वदेशी आंदोलन के लिए आह्वान किया। उन्होनें कहा - जिस व्यापार से देश को क्षति पहुंचती है जिससे देश का रूपया बाहर जाता है उस व्यापार को कदापि नहीं करना चाहिए। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप विलायती कपड़ों का व्यापार बंद कर दीजिए।'

जानकी देवी बजाज ने अपनी कुछ बहनों के साथ विदेशी माल की दुकान पर धरना दिया और अनशन किया जिसके कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। उन्होंनें मारवाड़ी स्त्रियों में चेतना भरने के लिए स्थान-स्थान पर जाकर विदेशी स्त्रियों का बहिष्कार किया तथा उनकी प्रेरणा से महिलाओं में आंदोलन के लिए अपने स्वर्ण आभूषण दान कर दिये। 'हिंदुस्तानी मर्चेंटस एण्ड कमीशन एसोसियेशन' ने यह निर्णय लिया कि कार्य समिति की हर बैठक में सभी भाई खद्दर पहन कर आएंगे।

अब जमनालाल बजाज असहयोग आंदोलन से पूरी तरह जुट गए थे। उन्होनें 9 अप्रैल 1921 को ब्रिटिश सरकार को रायबहादुर का खिताब भी वापस कर दिया। मारवाड़ी व्यापारियों में इसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई और वे सब जमनालाल बजाज के अनुयायी बननें में अपना सौभाग्य समझने लगे। इस जागृति के मंत्रदाता जमनालाल थे, जिन्होनें व्यापारियों में अंग्रेजी उपाधियों के प्रति अलगाव तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अधिकाधिक सहयोग देने की प्रेरणा प्रस्फुटित की। स्वतंत्रता आंदोलन की चिंगारिया सारे देश में फैलती गई। महात्मा गांधी के साथ जमनालाल बजाज देश के विभिन्न भागों का दौरा करने लगे। अपने असम प्रवास से उन्होनें 26 अगस्त 1921 को जानकी देवी के लिखे पत्र में लिखा - ''मारवाड़ी व्यापारियों ने भविष्य में विदेशी सूत का कपड़ा नहीं मंगाने की प्रतिज्ञा कर ली है - गोहाटी में विदेशी कपड़ो की होली भी अच्छी हुई। कीमती कपड़े भी जलाए गए। बापू पर इनकी गहरी श्रद्धा और प्रेम भी है तथा इनमें त्यागभाव भी है । गौहाटी में महिलाओं की तीन सभाएं हुई जिनमें एक मारवाड़ी महिलाओं की थी। उनमें 150 मारवाड़ी महिलाओं ने भाग लिया। उन्होनें लिखा '' यहां मुझे बापू का भाषण मारवाड़ी में अनुवाद करके सुनाना पड़ा, बहनों में स्वदेशी के प्रतिक्रिया आशातीत रूप से सफल हुई। सिलहट से उन्होनें लिखा डिब्रुगढ में मारवाड़ियों की तरफ से बापू का अच्छा स्वागत हुआ। गांधी जी ने महिलाओं को स्वदेशी पहनने को कहा और गहनों की बुरी प्रथा के बारे में भी चेतना के स्वर फूकें।

झांडा आंदोलन

सन् 1923 में जलियॉवाला बाग के शहीदों की स्मृति में नागपुर के नागरिकों ने तय किया कि वे राष्ट्रीय सप्ताह मनाएंगे और तिरंगे झंडे के साथ जूलूस निकालेंगे। जुलूस पर आंग्ल सरकार ने रोक लगा दी। नागपुर की जनता के आग्रह पर जमनालाल जी ने इस जुलूस का नेतृत्व स्वीकार कर लिया। यह राष्ट्रीय स्तर का पहला आंदोलन था। अंग्रेजो ने कुछ इलाकों से राष्ट्रीय झंडे को ले जाने पर रोक लगा दी थी। जबलपुर में अंग्रेज पुलिस ने तिरंगे को अपने पैरों के नीचे कुचल कर उसका अपमान किया। जमनालाल जी ने कहा - 'हम अपने राष्ट्रीय झंडे का अपमान कभी नहीं सह सकते।' उन्होनें अंग्रेजी शासन को एक चुनौती देने की ठान ली इसके बाद तो संपूर्ण राष्ट्र से आंदोलन में भाग लेने वाले अनेकों स्वयंसेवकों का तांता सा लग गया। मारवाड़ी नवयुवकों ने इसमें भारी मात्रा में योगदान दिया। बड़ा बाजार से अनेकों स्वयंसेवकों ने अपनी गिरफ्तारियां दी। इस सत्याग्रह के दौरान जमनालाल बजाज की राजनीतिक प्रतिभा ने राष्ट्रीय आंदोलन पर अपनी अमिट छाप छोड़ी।

यह आंदोलन एक सौ नौ दिन चला जिसमें एक हजार आठ सौ अड़तालिस से अधिक गिरफ्तारियां हुई। जमनालाल जी को अठारह माह का कठोर कारावास तथा तीन हजार रू. जुर्माना किया गया। जमनालाल ने जुर्माना देने से इंकार कर दिया। उनकी मोटर और घोड़ागाड़ी जब्त कर ली गई। इन चीजों की नीलामी करके जुर्माना वसूल करने का फरमान जारी हुआ पर

उसके लिए पूरे मध्य प्रांत में कोई बोली लगाने वाला न मिला। जनता तो दूर सरकारी अफसरों ने भी इनको नहीं खरीदा। गाड़ियों को राजकोट ले जाया गया। गुजराती के अखबार 'सौराष्ट्र' ने अपने संपादकीय में लिखा -'वर्धा तथा पूरे मध्य प्रांत में तो कोई देश घातक नहीं मिला अब ये गाड़ियाँ देश घातक की तलाश में काठियावाड लाई गई हैं' आखिकरकार राज्य के किसी अंग्रेज ने ही जमनालाल जी की गाड़िया सौ रू. मे खरीदी।

जेल में जमनालाल के साथ विशेष व्यवहार की आज्ञा हुई थी। लेकिन उन्होनें सी क्लास में ही रहना स्वीकार किया जहां उन्हें सामान्य कैदियों जैसा शारीरिक श्रम करना पड़ा। यह आंदोलन सफल हुआ और आंग्ल सरकार ने स्वीकार किया कि तिरंगे झंडे को कहीं भी फहराया जा सकता है। झंडे पर लगा प्रतिबंध हटा और अठारह महीने के कठोर कारावास के बाद अपने सभी 1500 साथियों के साथ छुटकर जमनालाल करावास से बाहर आए। वर्धा में उनका अभूतपूर्व स्वागत हुआ उनका जुलूस निकाला गया। माताओं, और बहनों ने उन्हें अबीर गुलाल लगाया, मुंह में घी शक्कर देकर अपना हृदयोद्गार प्रकट किया। सारा शहर सजाया गया। घरों के सामने लोगों ने अपने-अपने पास जो चीजे थीं उसी के तोरण लगाए। बर्तन वालो ने बर्तनों के , कपड़े वालें ने कपड़ों के, किराने वालों ने किराने की चीजों के और सब्जिवालों ने हरी मिर्च शाक सब्जी के तोरण लगाए। मालाओं और फलों की तो गिनती ही न थी।

जमनालाल जी को अपनी विजय पर हजारों तार और बधाई संदेश मिले। मौलाना मोहम्मद अली ने अपने भेजे तार में लिखा - 'मेरे बहादुर बनियाँ बहुत खूब, तुम्हारे कदमों को छू लेने को जी चाहता है।' विट्ठलभाई पटेल ने लिखा - 'मारवाड़ी कौम का उत्कट प्रेम मैनें जमनालाल जी पर देखा। क्या जमनालाल जी की उग्र तपस्या मारवाड़ियों के दिल को पिघला देगी ? जमनालाल के प्रयत्नों से व्यापारी वर्ग ने करोड़ों रूपये की आर्थिक सहायता दी।' एक बार जब बिहार कांग्रेस के खर्चे को लेकर कांग्रेसी नेताओं और रामकृष्ण डालमियां मे मतभेद पैदा हो गया था तब जमनालाल जी ने ही समझौता कराया था। जमनालाल जी की जेल यात्रा के बाद तो कई मारवाड़ी व्यापारी जेल जाने में गर्व का अनुभव करने लगे। **जमनालाल जी का मत था कि जब तक हम अपनी भीतरी कमजोरियों को नहीं दूर कर लेंगे तब तक स्वराज नहीं आ सकता। हमारे देश की सबसे बड़ी कमजोरी है आपसी झगड़ें।**

नागपुर की ही घटना है। वहां साम्प्रदायिक दंगे भड़क रहे थे। जमनालाल जी उनके बीच पहुंच गए। वह वहां घायलों की सेवा करने लगे। दंगाईयों ने उनसे वहां से चले जाने को कहा लेकिन वह गए नहीं। इसी बीच कहीं से एक पत्थर आकर उनके हाथ में लगा। खून बहने लगा। जमनालाल को घायल देख वहां दंगा रूक गया। उनके हाथ में कई टांके लगे। गांधीजी ने उन्हें शाबाशी देते हुए पत्र मे लिखा 'तुमको चोट पहुंची, इससे मुझे जरा भी दुख नहीं है। मैं तो मानता हूँ कि हम जैसे बहुतों को शायद बलिदान होना पड़े।' यह जहर इतना ज्यादा फैल गया है कि कुछ शुद्ध व्यक्यिों का बलिदान हुए बिना हमे इस रोग से छुटकारा पाना मुश्किल है।''

इसी विजय के बाद जमनालाल के छोटे बेटे "रामकृष्ण" का जन्म हुआ था। पिता के रूप में जीत कर आने की खुशी में पहले उनका नाम रणजीत रखा गया था लेकिन बाद में जमनालाल को रण अहिंसा का विरोधी लगा अत: बदलकर उन्होंने "रामकृष्ण" कर दिया।

सन् 1927 में गांधी जी के कहने से वे हरिजनों के साथ उठने बैठने लगे थे। उन्होनें अपने घर में भी एक हरिजन को नौकर रख लिया था और उसके हाथ का भोजन भी करने लगे थे। बिरादरी के लोगों ने इसका बहुत विरोध किया और उन्हें अपने घरों में बुलाने से हिचकिचाने लगे। जमनालाल ने कहा – आप न्यौता दे तो भी मैं आपके यहां नहीं आऊंगा। यह कहकर उन्होनें बिरादरी को चिंता मुक्त कर दिया। पर उनका त्याग व्यर्थ नहीं गया। स्थान – स्थान पर हरिजनों को मंदिर में प्रवेश मिलने लगा। लक्ष्मीनारायण मंदिर के ट्रस्टियों को भी हार माननी पड़ी। लक्ष्मीनारायण मंदिर हरिजनों के लिए खोल दिया गया। मंदिर का ट्रस्टी भी हरिजन को ही बनाया गया।

नमक सत्याग्रह

1930 में गांधीजी ने अपने समय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आंदोलन छोड़ा। जमनालाल विले पार्ले छावनी में नमक सत्याग्रह के नेता चुने गए। इसमें शामिल होने के कारण उन्हें 2 वर्ष का कारावास दिया गया। जमनालाल जी ने इस आंदोलन में अपना सर्वस्व होम करने का संकल्प ले लिया। अपने बड़े बेटे कमलनयन बजाज को दांडी मार्च के साथ भेजकर जानकी देवी बजाज जमनालाल के साथ सत्याग्रही तैयार कराने के लिए बंबई की विले पार्ले छावनी आ गई। जमनालाल ने उस समय सभा को संबोधित करते हुए कहा था आप लोग अपने तथा अपने धन की आहूतियां हाथ में लेकर इस राष्ट्रीय यज्ञ की ज्वाला को बढ़ाने के लिए आगे बढेंगे तो इस यज्ञ की पूर्ति और उसकी सफलता के कारण बनकर आप अपने तथा अपनी जाति के यश को सदा के लिए उज्जवल करेंगे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने उनकी प्रशंसा में लिखा – जब-जब कांग्रेस ने सत्याग्रह छेड़ा जमनालाल उसमें शरीक हुए और उन्होनें कैद की सजाएं भोगी। महादेव देसाई का कहना था कि त्याग और कष्ट सहन में वे किसी कांग्रेस वादी से पीछे नहीं रहे। कई बार जेल गए और तीसरे दर्जे की कैदी की मुसीबतें सही।

जमनालाल का त्याग देख कर ही मारवाड़ी समाज के मन में आजादी की बात बैठी और गांधी जी के प्रत्येक आंदोलन में उन्होनें सक्रिय भाग लिया। राष्ट्रीय आंदोलन के समय जेल, भय का नहीं बल्कि गर्व का प्रतीक बन चुका था। मारवाड़ी भाई सरकार के विरोध में अपनी दुकानें और बाजार बंद करने के अभ्यस्त हो चुके थे। राष्ट्रीय नेताओं की अपील पर वह अपने थैलियों का मुख खोल देते थे। जमनालाल जी का वर्धा निवास हो या बिडला हाउस सभी राष्ट्रीय नेताओं के आतिथ्य गृह बन गए थे। गांधी जी जमनालाल जी के लिए कहा करते थे – जमनालाल के सभी घर धर्मशाला बन गए है वे अब उनके नहीं रहे।

कमला का विवाह व हिन्दी प्रचार

जमनालाल जी गांधीजी के बताए रचनात्मक कार्यों में जुट गए थे। खादी के प्रचार व प्रसार के लिए वे देशभर की यात्राएं कर चुके थे। अखिल भारतीय चर्खा संघ से भी वह जुड़े थे। हिंदी को ईमान की भाषा मानते थे और उसे राष्ट्रभाषा के स्तर पर स्थापित करने के लिए हर तरह का प्रयास कर रहे थे। राष्ट्र भाषा प्रचार समिति की स्थापना और हिंदी साहित्य सम्मेलन, मद्रास अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप में वे दक्षिण तक हो आए थे। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की ओर से राजाजी के साथ उन्होनें प्रचार यात्राएं की। दक्षिण भारत के लोग बड़े उत्साह से हिंदी पढ़ने लगे थे। हिंदी नवजीवन, कर्मवीर, प्रताप, राजस्थान केसरी, त्यागभूमि आदि पत्र पत्रिकाओं को वे निरंतर प्रोत्साहन और मदद दे रहे थे। इस तरह हिंदी भाषा की उन्होनें अभूतपूर्व सेवा कर राष्ट्र में हिंदी के प्रचार व प्रसार के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया।

साबरमती आश्रम में ही उनका परिवार रह रहा था। वहीं उन्होनें बड़ी बेटी कमला के विवाह का आयोजन अत्यंत सादगीपूर्ण रीति से सम्पन्न किया। वधू कमला और रामेश्वर प्रसाद नेवटिया खादी के ही कपड़ों में सजे हुए थे। न बैंड था न दहेज न कोई दिखावा, वह एक आदर्श विवाह था जो दोनों परिवारों ने प्रस्तुत किया था। गांधी जी ने स्वयं वर वधू को आर्शीवाद देते हुए कहा था कि वे धर्म की रक्षा और देश की सेवा करें।

सीकर तथा जयपुर क्षेत्रों में सेवा

जमनालाल जी का जन्म राजस्थान के सीकर गांव में हुआ था अत: जन्मभूमि के प्रति उनका लगाव स्वाभाविक ही था। वह अक्सर कहा करते थे, "मैं तो गुलाम नं. चार हूँ। अंग्रेजो का पहला गुलाम ब्रिटिश भारत, दूसरा गुलाम देशी रियासतें, रियासत का गुलाम सीकर ठिकाना, और सीकर का गुलाम मैं।"

अक्सर वह राजस्थान जाकर वहां की समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करते थे। विजौलिया के राजा ने एक बार लगान न देने पर किसानों की जमीनें छीन ली थी। किसानों ने अपने हक के लिए सत्याग्रह किया। जमनालाल को सूचना मिलते ही उन्होनें बिजौलिया जाकर राजा और किसानों के बीच समझौता करवाया। इसी प्रकार ब्यावर के मिल मजदूरों ने भी हड़ताल कर दी। जमनालाल जी ने ही मालिक और मजूदरों के बीच समझौता करवाया। उन्होनें प्रजा को शासकों के जुल्म से बचाने के लिए अनेक रियासतों में प्रजामंडलों की स्थापना की जिनका प्रमुख कार्य था नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा और उत्तरदायी शासन की स्थापना। उनका विश्वास था कि देशी राज्यों की प्रजा को भी शासकों के जुल्म से बचाने की उतनी ही जरूरत है जितनी ब्रिटिश भारत की प्रजा को अंग्रेजो के जुल्म से बचाने की।

जमनालाल जी इस समय तक पूरी तरह गांधीजी के भक्त हो गए थे। गांधीजी की इच्छा उनके लिए भगवान की इच्छा थी। उनका उत्कट प्रेम गांधीजी को रोक न सका। 1934 में वह

गांधीजी को वर्धा आश्रम रहने के लिए मना लाए। जमनालाल के मित्रों ने व्यंग्य किया कि आखिर बनिए ने बापू को खरीद ही लिया पर जमनालाल जी पर उन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। बापू को अपने बीच पाकर वह धन्य हो गए। एक बार सरदार पटेल ने बातों ही बातों में जमनालाल जी से कह दिया कि आप तो केवल गांधी जी के आदेशों का पालन करते है, खुद आगे बढ कर कुछ करिए तो जानें। जमनालाल को बात लग गई। हालांकि यह बात अनौपचारिक रूप से यूं ही बातों-बातों में निकल गई थी, जमनालाल जी पर यह बात लागू भी नहीं होती थी पर जमनालाल जी ने इसे एक चुनौती मान लिया। सन् 1938 में जयपुर और सीकर राज्यों में आपसी तनाव बढ़ गए थे। अक्सर रियासतों के झगड़े अंग्रेजी राज्य में होते ही रहते थे। इन झगड़ो के जन्मदाता अंग्रेज अधिकारी ही रहते थे। उनका तो मकसद ही था कि हिन्दुस्तानी आपस में लड़ते रहे और वे राज्य करें। यही कार्य उन्होनें सीकर राज्य के साथ किया। उस समय जयपुर अंग्रेजों की रीजेंसी में था और सीकर उसके अंतर्गत एक छोटा सा राज्य था। दोनों में छोटी-छोटी सी बातों को लेकर अक्सर झगड़े होते रहते थे। एक बार बात यहां तक बढ़ी कि आपस में गोलियां चल गई। उस समय सीकर के राजा रावराजा माधोसिंह थे। वे बड़े उदार एवं लोकप्रिय प्रशासक थे। प्रजा को पुत्र की भांति चाहते थे। अक्सर उनका लगान माफ कर देते थे। अंग्रेजों को यह पंसद नहीं था अत: उन्होनें जयपुर और सीकर रियासतों को लड़वा दिया।

जमनालाल को सूचना मिलते ही वह सीकर पहुंचे और अपने प्रयत्नों से दोनों राजाओं में सुलह करवा दिया। अंग्रेजों को यह बात बिल्कुल न भायी उन्हें तो सीकर राज्य अपने हाथ में लेना ही था अत: उन्होनें पुन: एक चाल चली। सीकर के रावराजा को अजमेर ले गए और उन्हें पागल करार देकर, सीकर के राज्य व्यवस्था 'कोर्ट ऑफ वार्ड' के मातहत कर दी। उन्होनें रावराजा पर पाबंदी लगा दी कि वह सीकर राज्य की सीमा में प्रवेश नहीं कर सकते। सीकर राज्य की प्रजा अपने राजा के अपमान से क्षुब्ध हो उठी और पूरे सीकर राज्य में अंग्रेजी अत्याचार के विरोध में उत्तेजना एवं तनाव बढ़ गया।

जमनालाल जी उन दिनों जयपुर राज्य प्रजामंडल के अध्यक्ष थे। अंग्रेजो ने उनके विरूद्ध भी कार्यवाही की और उनके जयपुर प्रवेश पर रोक लगा दी। यह अन्याय था। जमनालाल जी ने इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। बापू से आर्शीवाद लेकर वह जयपुर की सीमा में प्रवेश कर गए। पुलिस ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन सफल न हुए। अंत में जमनालाल जी को गिरफ्तार करके जयपुर से चालीस मील दूरी पर छोड़ दिया। इस छीना झपटी में जमनालाल जी को काफी चोटें आई पर उन्होनें हार नहीं मानी, वे पुन: जयपुर में प्रवेश कर गए। अंग्रेजों ने हार कर उन्हें जयपुर स्टेट में ही नजरबंद कर दिया लेकिन जमनालाल ने अपनी हर लड़ाई की तरह ये लड़ाई भी जीती। अंग्रेज सरकार को प्रजामंडल की हर शर्त, हर मांग को स्वीकार करना पड़ा। जयपुर राज्य तथा प्रजामंडल में समझौता हुआ।

अन्य कार्य

जमनालाल की एक आदत थी आत्म विश्लेषण की। अपने जन्मदिन पर वह आत्म विश्लेषण कर वह देखा करते थे कि उन्होनें साल में क्या खोया क्या पाया? सन् 1933 में उन्हें लगने लगा था कि जिस मंजिल की तलाश में वह निकले थे वह तो छूटती जा रही थी स्वराज्य की कल्पना अभी कोसों दूर थी। धर्म की राह भी छूट रही थी। गांधी जी की आज्ञा के मुताबिक जीवन चल रहा था। 1938 में उन्होनें गांधी जी को लिखा 'आपका आर्शीवाद तो सदैव साथ रहता है परंतु जब मैं विचार करता हूँ तो मुझे साफ दिखाई देता है कि मैं आपके आर्शीवाद का पात्र नहीं हूँ। मेरी कमजोरियों पर विचार करता हूँ तो मन में आत्महत्या का विचार भी आता है। अहिंसा व सत्य का आचरण कम होता दिखाई देता है। मेरे दिल का दर्द किससे कहूँ?' यह उनका आत्म मंथन ही उन्हें सेवा के क्षेत्र में अग्रणी बनाए रहा। धीरे-धीरे उन्होनें पदों को छोड़ना प्रारंभ किया। विभिन्न संस्थाओं से त्याग पत्र दे दिया। पद छोड़ने का अर्थ था पद त्याग, कर्म तो वह निरंतर करते ही रहे।

पचास के करीब उनकी आयु हो रही थी। अब तक वह जीवन में तेज गति से क्रियाशील ही रहे। अपने शरीर की उन्होनें कभी परवाह नहीं की। अत: अब वह भी बीमार रहने लगा था। लेकिन जमनालाल जी फिर भी कार्य करते रहे। 1940 में द्वितीय विश्वयुद्ध के खिलाफ देश में व्यक्तिगत विरोध का सत्याग्रह प्रारंभ हुआ। जमनालाल जी कैसे पीछे रहते। उन्होनें सत्याग्रह किया और 1940 में पुन: जेल में बंद हो गए। इस बार उन्हें नागपुर जेल में रखा गया। यहां संत बिनोवा और उनके सत्संग से उन्हें आत्मचिंतन का मौका मिला। गुरू के चरणों में बैठकर वह आत्मप्राप्ती के सही मार्ग की खोज में संलग्न हो गए। बिनोवा जी ने उन्हें धर्म मार्ग पर सक्रिय किया।

जेल से छूटने के बाद वह आत्मप्राप्ती की भूख मिटाने के लिए भ्रमण पर निकल पड़े। स्वास्थ्य अच्छा नहीं था पर उनके पैर रूके नहीं। वे अरविंद आश्रम गए। महर्षि रमण से भी भेंट की। उसके बाद उत्तर की ओर चले गए। पहले देहरादून फिर शिमला, यहां वह स्वास्थ्य लाभ के लिए ही आए थे। शिमलावास के दौरान ही गांधीजी ने उन्हें पत्र लिखा कि वे लौटते समय देहरादून जाएं और वहां कमला नेहरू की गुरू मां आनंदमयी के दर्शन करें, उन्हें मानसिक शांति मिलेगी। जमनालाल जी तो जीवनभर मां की गोद के लिए तरसते रहे। उन्हें आनंदमयी मां क्या मिली जैसे सचमुच की मां मिल गई। वे तो उनकी गोद में सिर रख कर लेट गए और वहीं रहने का विचार करने लगे। एक दिन के लिए गए थे पर मन वहां से आने का नहीं हो रहा था। वे अक्सर कहा करते थे कि मुझे मेरी मां बहुत प्यारी लगती है पर एक मां ऐसी भी चाहिए जिसकी गोद में मैं लेट सकूँ और ज्ञान की भूख मिटा सकूँ। देहरादून एक दिन के लिए ही गए थे अत: वापस तो आना ही था। मां से पूछा आपकी गोद में सर रख कर लेट सकता हूँ? मां ने वात्सल्यपूर्ण अनुमति दे दी। जमनालाल जी को जैसे स्वर्ग मिल गया। मां से पूछा "मेरी मृत्यु कब होगी? बीमार थे अत: उन्हें लगने लगा कि अब वह नहीं बचेंगे। मां ने

कहा - मृत्यु का समय किसी को कैसे बताया जाए? समझो कि हर घड़ी मौत सिर पर खड़ी है। हर आदमी को यही समझना चाहिए। पर जमनालाल जी जिद पर अड़ गए मुझे तो समय बताइए। मां ने कहा - छह महीने की तैयारी से काम करो। मां आनंदमयी के इस वचन को दृढ मानकर उन्होनें अपने जीवन की अंतिम तैयारी शुरू कर दी।'' उन्होनें तय कर लिया कि अब वह छह महीने तक वर्धा में ही रहेंगे। वर्धा लौटकर आए तो उन्हें हर काम की जल्दी मची थी। मां ने कहा था मूक प्राणी की सेवा करो। गांधीजी की सलाह से उन्होनें तय किया कि वह गोसेवा करेंगे। उन्होनें वर्धा में ही एक कुटिया बनवा ली। वहां अपनी कामधेनु कौशल्या के साथ वे रहने लगे। मन ही मन निश्चय कर लिया वह अब रेलगाड़ी या मोटरगाड़ी में नहीं बैठेंगे। यह निर्णय 15 अगस्त 1941 से 15 फरवरी 1942 तक के लिए किया था। लेकिन इसका प्रारंभ बहुत पहले कर दिया था। वे दिन रात गो सेवा में जुट गए। गो सेवा करते-करते जैसे जमनालाल को सब कुछ मिल गया। जीवन जीने का अर्थ मिल गया था।

महाप्रयाण

11 फरवरी 1942 को अचानक उन्हें एक उल्टी हुई और वे बेहोश हो गये। सूचना मिलते ही सभी दौड़े आए। डॉ. ने देखा ब्लडप्रेशर हाई होने के कारण ब्रेन हैम्ब्रेज हो गया था। बापू को खबर दी गई। जमनालाल 15 मिनट से बेहोश है, उस समय वह सेवाग्राम में थे। घनश्यामदास बिड़ला भी उन्हीं के साथ थे। उनके साथ ही बापू वर्धा के लिए रवाना हो गए। उनके मुंह से शब्द निकला-गजब होगा यदि उनसे हमारी मुलाकात न हो पायी। पर वे तो चिरनिद्रा में विलीन हो चुके थे। कर्मयोगी, कर्म करने ही आया था, कर्म समाप्त होते ही चला गया। जमनालाल नहीं होते तो बापू के स्वतंत्रता आंदोलन का क्या होता, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। बापू जब पहुंचे तो परिवार विलख रहा था। बापू कुछ कह न सके।

शवयात्रा में पूरा वर्धा नगर उमड़ आया था। दूर-दूर से लोग आये थे उनके अंतिम दर्शनों को। रामधुन गाई जा रही थी, वंदे मातरम सेठ जमनालाल की जय के नारे लगाए जा रहे थे। जमनालाल जी का पार्थिव शरीर राख में मिल गया, ज्योति में ज्योति विलीन हो गई। दुख में डूबा विशाल जन समूह उनकी यादों में डूबा था। जमनालाल जी चले गए पर अपने अनगिनत कार्यों की लड़ी अपने पीछे छोड़ गए।

श्रद्धाजंलि

उनकी शोक सभा में सरदार वल्लभभाई पटेल ने कहा - ''वे चले गए इससे अच्छी मौत हो नहीं सकती परंतु कहावत है - सौ मरें, पर सौ को पालने वाला नहीं मरे। देश के विभिन्न भागों में हमारे सैकड़ों कार्यकर्ता अपनी झोपड़ियों में बैठे मूक आसूं बहा रहे होंगे। बापू ने सच्चा बेटा खोया, जानकी देवी और परिवार ने सच्चा मित्र, कितनी ही संस्थाओं ने अपना संरक्षक खोया और हम सबों ने तो अपना प्यारा सगा भाई ही खो दिया। मैं बहुत सूना और अकेलापन महसूस कर रहा हूँ।''

जमनालाल जी के निधन पर सरदार वल्लभभाई पटेल के इन उदगारों ने पूरे देश की भावना ही व्यक्त कर दी। क्या किसान, क्या व्यापारी, क्या गरीब, क्या अमीर, क्या हरिजन, क्या सस्वर्ण, क्या स्त्री, क्या पुरूष, क्या कार्यकर्ता, क्या नेता, क्या मजदूर, क्या मालिक सभी उनकी कमी को महसूस कर रहे थे। जमनालाल जी के चले जाने से उनकी अपनी जिंदगी के हिस्से में कुछ सूनापन कुछ खालीपन आ गया हो।

जमनालाल कहते थे मृत्यु ऐसी हो कि न जाने वाले को कष्ट हो न पीछे वालों को दुख रहे। न सेवा लेने की जरूरत पड़े। रात को नहीं मरना चाहिए, क्योंकि घरवालों को जागना पड़ता है, खाने के पहले भी नहीं मरना चाहिए, लोग भूखे रहते है। दोपहर को न मरे, लोगों को मुझ जैसे भारी शरीर को उठाकर चलने में पसीना आता है। जैसी उनकी इच्छा थी वैसी ही उन्हें मृत्यु प्राप्त हुई। एक झटका आया चल दिए, न बीमार हुए, न सेवा कराई, न किसी को तकलीफ दी। दादा धर्माधिकारी ने कहा 'मरने में भी जमनालाल जी ने अपनी बनियावृत्ति से काम लिया। न बीमार हुए, न लाचार हुए और न किसी की सेवा ली।' केरियर एल्विन ने कहा - 'उनके मुंह से निकलने वाले प्रत्येक शब्द को आप जब चाहें कसौटी पर पूरा उतार सकते थे।' जमनालाल जी के महाप्रयाण पर उनके प्रशंसक, आलोचक, विरोधी, अंधभक्त सभी ने बड़ी मार्मिकता से अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए सबको यह लगा कि जमनालाल के रूप में उनका ही कोई सगा कोई अपना चला गया है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा 'मेरे निजी कामों में उन्होनें एक भाई जैसा साथ दिया' जवाहरलाल नेहरू ने भी अपना दर्द व्यक्त करते हुए कहा था 'हमारे सोचने के तरीक अलग होने के बावजूद में अपने घरेलू तथा सार्वजनिक मामलों में सलाह लेने के लिए अक्सर उनके पास जाया करता था, क्योंकि मैनें देख लिया था कि वे बड़े ध्येय निष्ठ और व्यवहार कुशल व्यक्ति थे।' काला कालेलकर ने उनके गुणों की प्रशंसा करते हुए कहा था वे कार्य का महत्व जितना समझाते थे उससे भी अधिक कार्यकर्ता को अपनाते थे। श्रीमती सरोजनी नायडू ने उनकी प्रशंसा में कहा - 'जमनालाल में एक सरल किन्तु सच्चा आकर्षण था जो उनके स्वभाव की मधुरता और दयालुता की उपज था' जमनालाल जी सदा अपने आतिथ्य सत्कार के लिए प्रसिद्ध रहे। वर्धा स्थित उनका गृह निवास राष्ट्रीय अतिथिगृह के नाम से जाना जाता था यहां तक कि स्टेशन पर कोई व्यक्ति असंमजस में पड़ा हो कि वह कहा जाएं? तो तांगे वाले उसे बजाजवाड़ी पहुंचा दिया करते थे। और बजाजवाड़ी में उस राष्ट्रीय कार्यकर्ता को पूरा सम्मान मिलता था। उनके इसी गुण को याद करते हुए मौलाना आजाद ने अपने शोध संतृप्त हृदय के उदगार प्रकट किए ''उनका हृदय उनके घर का द्वार राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं के स्वागत के लिए हमेशा खुला रहता था'' किशोरलाल मश्रूवाला ने कहा ''वे बलवान थे, बलि थे और बाल थे'' अर्थात वे कर्त्तव्यवान, दानी धनी तथा बालकों जैसे सरल थे। महादेव देसाई ने उन्हें गांधी भक्त के रूप में देखा। पार्वती ने शिवजी की आराधना कठिन तपश्चर्या से की थी। प्रसन्न होकर शिवजी ने कहा अपने तप से तुमने मुझे मोह लिया है,

जैसे मीरा कबीर ने किया। जमनालाल ने अपना सर्वस्व देकर गांधीजी को मोह लिया। कबीर, मीरा मध्यकालीन भक्त हैं, जमनालाल जी आधुनिक भक्त कहे जा सकते है। ''गांधीजी ने अत्यंत मार्मिक शब्दों में अपनी वेदना व्यक्त करते हुए कहा मेरे लिए तो वह मेरी कामधेनु थे अब ऐसा दूसरा पुत्र कहां से लाऊं?'' आचार्य बिनोवा ने कहा - ''देह आत्मा के विकास के लिए है परंतु जिनकी आत्मा विशेष उन्नत हो जाती है, उनके विकास के लिए देह में पर्याप्त गुंजाईश नहीं होती। उनका वह विशाल आत्म देह को माप में समाता नहीं। तब देह को फेंककर देह रहित अवस्था में ऐसी आत्मा अधिक सेवा करते है। ऐसी स्थिति जमनालाल की हुई है। कम से कम मैं तो देख रहा हूँ कि उन्होनें आपकी और मेरी देह में प्रवेश किया है। ऐसी मृत्यु जीवित मृत्यु है। मृत्यु भी जीवित हो सकती है जीवन भी मृत हो सकता है। जीवित मृत्यु बहुत थोड़ो की होती है वैसी यह जमनालाल की मृत्यु है।''

हो गए नजरों से ओझल वे कहीं।
फिर भी लगता पास है मेरे कहीं।।

जमनालाल जब तक जीवित रहे शरीर में हृदय की तरह कार्यरत रहे। उनके निधन पर हर क्षेत्र के व्यक्तियों ने अपनी-अपनी तरह, अपने-अपने अनुभवों के आधार पर उनकी प्रकृति को स्मरण किया। इन गुणों को यदि एक जगह लिखा जाए तो लंबी फेहरिस्त ही बन जाए। इसलिए इस विषय को यही समाप्त करती हूं। उनके सेवा कार्यों का उल्लेख करते हुए एक मनीषी ने कहा ''स्वतंत्रता आंदोलन, गोसेवा, नारी उत्थान, खादी, हरिजन उद्धार, नीतिपूर्ण व्यापार आदि अंगो में रक्त संचार करने, चुपचाप राष्ट्र की विशाल इमारत के कंगूरा या मीनार वे नहीं बने। वे चाहते भी नहीं थे। वे तो बने उसकी नींव के पत्थर वह इन वटवृक्षों की जड़ के समान थे।'' मृत्यु के बाद जो हजारों लाखों में प्रवेश कर गया हो उसे मृत कैसे माना जा सकता है? जमनालाल मर कर भी अमर हैं। जब तक सृष्टि रहेगी उनकी अमर कथा भारतीयों के दिल की प्रेरणा बन उसका मार्गदर्शन करती रहेगी। एक कवि ने कहा है -

पोछता आसूं रहा जमना जो हर एक आंख का।
जाते हुए हर आंख में वह कुंभ भर कर मिट गया॥

उपसंहार -

सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव बंबई के बिड़ला हाउस में स्वीकृत किया गया था। उनमें जमनालाल बजाज ने अपने पूरे परिवार सहित महत्वपूर्ण भूमिका निभाई अगर यह कहा जाये कि तत्कालीन मारवाड़ी समाज में जमनालाल बजाज का परिवार ही एकमात्र ऐसा गांधीवादी परिवार था जिसका प्रत्येक जन 1942 तक जेल यात्राएं भुगत चुका था तो अतिश्योक्ति न होगी। जानकी देवी बजाज इस आंदोलन के दौरान वर्धा, नागपुर, और जबलपुर की जेलों में रही। कमलनयन बजाज 1932 में संयुक्त प्रांत में सत्याग्रह करके जेल हो आए थे। राधाकृष्ण बजाज 1942 में वर्धा और नागपुर की जेलों में तीन वर्ष से अधिक काल

तक बंदी रहे। जमनालाल के दामाद श्री मननारायण अग्रवाल को इस आंदोलन के दौरान अठारह माह की सजा हुई। सबसे छोटे पुत्र रामकृष्ण बजाज को 1941 में 300 रू. जुर्माना और दो वर्ष की कैद हुई। श्रीमती सावित्री देवी बजाज इस आंदोलन में वर्धा, नागपुर, रायपुर वा जबलपुर जेलों में रही। यही एक मात्र ऐसा परिवार रहा जिसमें पूर्णरूप से आजादी की भावना का प्रस्फुटन हुआ। जमनालाल स्वयं अपने परिवार वालों को जेल जाने और कष्ट सहने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। जब भी कोई जेल जाता तो उनको काफी हर्ष होता था। गांधी जी और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने उनके धनी वृत्ति की सदा प्रशंसा की है। राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा 'इसका पता किसी को नहीं होगा कि उन्होनें कितनों को आर्थिक सहायता दी होगी। जिसको जरूरत पड़ी होगी या तो वह जानता था या वे स्वयं जानते थे। सहायता भी ऐसी नहीं कि कोई आसानी से भूल सके। गाढे समय में बहुतेरों को उन्हीं की सहायता से सांस लेने का और जीवित रहने का मौका मिला है।' जमनालाल जी के दिए दानों का यदि मोटा मोटा हिसाब आंका जाए तो सत्यागृह मुसलमानों में राष्ट्रीय भावना, दैनिक पत्रों, नागपुर कांग्रेस, जलियांवाला बाग स्मारक, राष्ट्रीय नेताओं की अतिथि सेवा, सार्वजनिक कार्य, खादी और हरिजन सेवा, विदेशी वस्त्र बहिष्कार, सुभाष कांग्रेस फंड आदि के लिए 1945 से पहले उन्होनें पचीस लाख से अधिक रूपये खर्च किए। जमनालाल ने जो किया देश हित और जनता की सेवा को सामने रख कर किया, चाहे वह व्यापार हो चाहे उद्योग हो। दान देने से पूर्व कभी उन्होनें हिसाब नहीं लगाया कि क्या दे रहे हैं कितना दे चुके हैं। सत्कार्य के लिए, अच्छे लोगों को वह सदा सहायता दिया करते थे। तभी तो बापू ने कहा था कि सत्याग्रही के नाते उनका दान सर्वोत्तम रहा। इंदिरा गांधी ने तो उन्हें कांग्रेस का भामाशाह कहा था।

परपंरा जो अब भी जीवित है -

जमनालाल के देहावासन के बाद उनके बड़े पुत्र कमलनयन बजाज ने , बजाज समूह की बागडोर सम्हाली। कमलनयन तथा रामकृष्ण की शिक्षा साबरमती आश्रम में गांधी और विनोवा की देख रेख में हुई थी। बाद में कमलनयन को बिनोवाजी के आश्रम में भेजा गया जहां उन्हें कई वर्ष तक कठोर अनुशासन का पालन करना पड़ा। कमलनयन को 18 वर्ष की अवस्था में ही नमक कानून तोड़ने के लिए गांधीजी के साथ डांडी कूच में भेजा गया था। अहमदाबाद में विदेशी कपड़ो की दूकानों पर भी धरना दिया। 1932 में उन्होनें अजमेर में विदेशी शराब की दुकानों में धरना दिया। इस कार्य के लिए पुलिस से उन्हें इतनी मार पड़ी कि वह बेहोश हो गए थे। बाद में उन्हें छह महीने के कठोर करावास की सजा भी हुई थी। भारत छोड़ो आंदोलन के समय चीमूर, आष्टी और वर्धा में राजनीतिक पीड़ितों की सहायता के लिए कमलनयन ने उनके हित में मुकदमा लड़ा और लगभग 3 लाख रूपये खर्च किए। उनके इस कृत्य से प्रसन्न होकर गांधी जी ने 22 नवम्बर 1945 को उन्हें लिखा 'जमनालाल का वारिस होना कोई मामूली बात नहीं है। तू उसका पुत्र होने के नाते उसका वारिस है। मैं उसका दत्तक

याने स्वीकार किए हुए बाप की हैसियत से वारिस हूँ। मेरा स्वार्थ यही है कि मेरा उसका नाम अखंडित रहे। उसने जो काम शुरू किया वह चलता रहे, इतना ही नहीं बल्कि ज्यादा शोभायमान हो। तभी तू और मैं इनके वारिस माने जायेंगे। तू पैसा कमाएगा, बड़ा सेठ माना जाएगा यह तो संभव हो सकता है किन्तु जमनालाल ने अपने जीवन के उत्तरी भाग में जो परोपकार के काम शुरू किए थे उनका क्या होगा?'

गांधीजी के इस पत्र का कमलनयन के जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। और उन्होनें व्यापार व्यवसाय में नैतिकता को प्राथमिकता देते हुए बजाज समूह को गति प्रदान की। उन्होनें व्यापार को आर्थिक समृद्धि का आधार न मानकर देश की खुशहाली को ही अपना लक्ष्य रखा। एक स्थान पर उन्होनें कहा थां जिन उद्योगों के साथ मेरा संबंध है उनसे मुझे फायदा हो यह मैं चाहता हूँ लेकिन मेरे किसी काम से देश के हितों को कोई नुकसान पहुंचे इसकी मैं निंदा करता हूँ। मैं ऐसे किसी भी कार्य में शामिल नहीं होऊंगा चाहे मुझे नुकसान ही क्यों न उठाना पड़े। उन्होनें सभी उद्योगपतियों को आह्वान करते हुए कहा था कि व्यापारियों को अपने हित से पूर्व देश का हित सोचना चाहिए। कमलनयन के नेतृत्व में बजाज समूह ने कई नई उत्पाद श्रृंखलाओं में प्रवेश किया जिसमें दुपहिए, तिपहिए वाहन तथा कई प्रकार के बिजली के उत्पाद शामिल है। बच्छराज एंड कंपनी लि., मुकुंद आयरन एंड स्टील वर्क्स, बजाज इलैक्ट्रिकल्स लि. और बजाज आटो के कमलनयन अध्यक्ष रहे। पंजाब नेशनल बैंक लि. डी.सी.एम., उड़ीसा सीमेंट, आदि कंपनियों के निदेशक भी रहे। 1960 में कमलनयन बजाज ने मुकुंद आयरन एंड स्टील के उत्पादों का निर्यात प्रारंभ कर दिया था। कमलनयन की मान्यता थी कि व्यवसायियों को राजनीति से अटूट संबंध रखना चाहिए। वह जब तक जीवित रहे राष्ट्रीय एवं सामाजिक हितों के प्रति सदैव जागरूक रहे। सन् 1972 में 57 वर्ष की अवस्था में अचानक ही उनका हार्टफेल हो गया और इस तरह देश का एक उदीयमान नक्षत्र विश्व के अंतराल में समा गया।

रामकृष्ण बजाज -

कमलनयन के बाद उनके छोटे भाई रामकृष्ण बजाज परिवार के मुखिया बने। रामकृष्ण बजाज भी 1940-45 के बीच स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के कारण जेल की यात्रा कर चुके थे। जब वह केवल सत्रह वर्ष के थे तभी उन्होनें सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के लिए गांधीजी से आज्ञा मांगी थी। गांधीजी ने उनकी दृढता और योग्यता को देखते हुए उन्हें सत्याग्रह में भाग लेने की अनुमति प्रदान की थी। उस समय सत्याग्रही को सत्याग्रह करने का स्थान और समय की सूचना अधिकारियों को देनी पड़ती थी। रामकृष्ण की सूचना स्वयं गांधी जी ने वर्धा के डिप्टी कमिश्नर को दी थी। उन्होनें रामकृष्ण के लिए एक ब्यान भी तैयार किया था जो रामकृष्ण को गिरफ्तार होने और मुकदमा चलाए जाने पर अदालत में देना था। उन्होनें स्वयं रामकृष्ण को बुलाकर एक-एक शब्द समझाया था और उससे पूछा था कि यदि वह इस ब्यान के किसी अंश से सहमत न हो तो उसमें उचित हेर-फेर कर दिया जाए। रामकृष्ण को सत्याग्रह

में शामिल होने पर दण्ड स्वरूप चार महीने की कड़ी कैद और तीन सौ रू. जुर्माने की सजा प्राप्त हुई पर रामकृष्ण हारे नहीं, जेल से रिहा होने के बाद भी वह बार-बार जेल जाते रहे।

अगस्त 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में उन्हें चार महीने का कठिन कारावास दिया गया। तत्पश्चात तीन साल के लिए नागपुर जेल में वह नजरबंद रहे। रामकृष्ण के 17वें जन्म दिवस पर आर्शीवाद देते हुए गांधीजी ने उन्हें कहा था अपने पिता के समान ही सच्चे और आत्मसंयमी बनो। गांधी जी विनोबा भावे तथा जमनालाल की देख-रेख तथा शिक्षा दीक्षा ने रामकृष्ण को कठोर परिश्रम, अनुशासन तथा कार्यकुशलता का वह पुट समावेश किया जो उनके भावी जीवन की सफलता का कारण बना। उनके लिए एक प्रसिद्ध उद्योगपति ने कहा था - रामकृष्ण को गांधी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत तथा व्यावसायिक नीति शास्त्र ने काफी प्रभावित किया है। इन सब विचारों का क्रियान्वयन उन्होंने बजाज उद्योग समूह के नियंत्रण में किया है। उनकी मान्यता है कि यद्यपि व्यावसायिक नीतिशास्त्र को व्यवसाय में लागू करना कुछ कठिन अवश्य है लेकिन एक बार क्रियान्वयन के बाद यह एक प्रक्रिया बन जाती है जिससे बाद में अधिक जोर नहीं आता। व्यवसाय में नैतिक मूल्यों के पालन से निस्संदेह दीर्घकालीन लाभ होता है और स्थायी ख्याति मिलती है।

रामकृष्ण बजाज ने कौंसिल फार वेलफेयर बिजनेस प्रेक्टिसेज की स्थापना अन्य लोगों के साथ मिलकर की। इससे उनका उद्देश्य था व्यवसायी तथा समाज दोनों एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी बनें। अपनी पुस्तक 'सोशल रोल ऑफ बिजनेस' में उन्होनें कहा है व्यवसायी को समाज के प्रति स्वयं को व्यवसायियों को नियंत्रित करने का अधिकार है। रामकृष्ण बजाज ने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि व्यापारी को आर्थिक कुशलता बढाने के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता पर भी ध्यान देना चाहिए। अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए ही उन्होनें हिंदुस्तान शुगर मिल्स के आस पास लगभग चालीस गांवों में ग्रामीण विकास कार्यक्रम का प्रारंभ किया। इसमें ग्रामीण युवकों को प्रशिक्षण सार्वजनिक संस्थाओं की देखरेख, कृषि को बेहतरीन तरीके से देखभालने की व्यवस्था और अन्य सामाजिक प्रवृत्तियों को संचालन बड़ी कुशलता से किया जा रहा है। फिक्की ने हिंदुस्तान शुगर मिल्स के इन ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों को पुरूस्कृत किया है।

ग्राहकों के हितों की सुरक्षा के लिए बजाज इलैक्ट्रिकल्स ने देश में पहली बार स्थान-स्थान पर गोष्ठियों आयोजित करके ग्राहको से विचार विमर्श किया है और उनके सुझावों तथा आलोचनाओं को महत्व देते हुए उपभोक्ता सरंक्षण के प्रयास किए हैं। कंपनी ने विक्रय के बाद सेवा को अधिक कारगर बनाया है। उदयपुर स्थित बजाज समूह की सीमेंट इकाई ने वायु प्रदूषण से स्थानीय समाज की रक्षा के लिए अस्सी लाख का यंत्र लगाया। कर्मचारियों के बेहतरीन वेतन, युक्ति संगत पदोन्नति, प्रशिक्षण के अवसर, आवास तथा उपयुक्त मनोरंजन सुविधाएं देकर बजाज आटो ने श्रम कल्याण का नया आदर्श भारतीय उद्यमियों के समक्ष रखा

है। जन कल्याण और रचनात्मक कार्यों को प्रोत्साहन देने के लिए रामकृष्ण बजाज ने 1976 में बजाज फांउडेंशन की स्थापना की थी। यह फाउन्डेशन उन संस्थाओं को पुरस्कृत करता है जिन्होनें ग्रामीण विकास में प्रयुक्त विज्ञान तथा तकनीकी विकास के लिए ठोस कार्य किया हो। इसके साथ ही उन्होनें जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट, जानकी देवी बजाज सेवा ट्रस्ट, कमलनयन बजाज चैरिटेबल ट्रस्ट आदि की स्थापना भी की। बजाज उद्योग समूह वर्धा और बंबई में कई संस्थाओं का मागदर्शन करता है।

राहुल बजाज -

राहुल बजाज ने 1968 में बजाज आटो का प्रबंध अपने हाथों में लिया। उन्होनें अपनी होशियारी, कार्यकुशलता से इसका लाभ एवं बिक्री 7 करोड़ से 1974-75 तक सत्ताइस करोड़ तक पहुंचा दी। 1984-85 में तो बजाज आटो की बिक्री आश्चर्यजनक रूप से बढकर दो सौ उन्यासी करोड़ पर हो गई और इस प्रकार 1960 से 1980 तक बज़ाज आटो ने दुपहिया वाहनों के बाजार पर अपना अधिकार बनाए रखा। इस बारे में राहुल बजाज का मत है कि यदि प्रबंधक वर्ग कर्मचारियों की समस्याओं के प्रति जागरूक रहे तो दोनों में बेहतरीन औद्योगिक संबंधो का निर्वाह स्वाभाविक हो जाता है। राहुल बजाज स्वयं श्रमिकों के साथ पूना में रहते हैं ताकि किसी भी समस्या का समाधान तुरंत किया जा सके। उनका कहना है कि सबसे बड़ी जिम्मेदारी तो कंपनी को ठीक तरीके से चलाना है। उत्पाद की उत्तम किस्म बनाए रखते हुए अंशधारियों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना तथा सरकार को सही समय पर करों का भुगतान करना है।

देश सेवा में बजाज परिवार का योगदान -

बजाज आज देश के उन चुनिंदा घरानों में से है जिनका राष्ट्रीय आंदोलन से गहरा संपर्क रहा है। बजाज आज एक ख्याति प्राप्त नाम है चाहे उद्योग हो या व्यापार, प्राद्योगिकी हो या प्रबंधक, समाजसेवा हो या लोककल्याण, हर कहीं बजाज आगे है, जब व्यावसायिक नैतिकता की बात आती है तो सहसा ही यही नाम उभर कर सामने आता है। बजाज को आज श्रेष्ठ उत्पाद किस्म, ग्राहक संतुष्टि तथा औद्योगिक कुशलता का पर्याय माना जाता है, नवीनतम टैकनोलॉजी के बल पर बजाज आटो आज भारत की सफलतम औद्योगिक इकाइयों में अग्रणी है और स्कूटर उत्पादन में विश्व में दूसरे नम्बर पर है। इसी प्रकार टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी के बाद बजाज समूह की मुकुंद आयरन एंड स्टील वर्क्स दूसरे स्थान पर है। हिंदुस्तान शुगर मिल्स देश की सबसे बड़ी तथा कुशल चीनी मिलों में स्थान रखती है। 1975-76 में बजाज की सम्पत्ति एक सौ तैंतालिस करोड़ दो लाख रूपये थी जो 1986-87 में बढकर सात सौ सतहत्तर करोड़ उन्यासी लाख हो गई थी। आज यह समूह परांपरागत उत्पादों के अलावा सीमेंट, इंजीनियरिंग सामान, दवाइयां, स्टील, चीनी तथा कई अन्य प्रकार के उत्पाद तैयार कर रहा है जिनका बाजार में विशिष्ट स्थान है।

बजाज ऑटो को उचित मूल्य तथा निर्यात प्रोत्साहन के लिए कई बार पुरस्कृत किया गया है फिक्की ने 1976 में निर्यात प्रोत्साहन के लिए पुरस्कृत किया तथा 1977-78 में इसे नेशनल अवार्ड मिला। ऐसोसियेशन ऑफ इंडियन इंजीनियरिंग इंडस्ट्री ने किस्म और विश्वसनीयता के लिए 1984 में बजाज ऑटो को पुरस्कृत किया। 1985 में इसी संस्था ने पुन: बजाज ऑटो को ही उसके तकनीकी और नवाचार के लिए पुरस्कृत किया। अंशधारियों ने बजाज आटो में अपना पूर्ण विश्वास अभिव्यक्त किया है जिसके कारण इसके शेयर आज बाजार में सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं लाभकारी है। बजाज ऑटो ने 1983 में जापान की कवासाकी कम्पनी से मोटर साइकिल तकनीकी के लिए समझौता किया जिसे 1984 में सरकार ने स्वीकृति दे दी। बजाज ऑटो ने उत्पादन बढाने के लिए औरंगाबाद में एक और इकाई स्थापित की है जिससे बजाज ऑटो की उत्पादन क्षमता दुगनी हो गई है।

1931 में हिंदूस्तान शुगर मिल्स की स्थापना हुई। इसके संचालन का भार रामेश्वर प्रसाद नेवटिया को सौंपा गया। प्रारंभ में इसकी गन्ना पेरने की क्षमता चार सौ टन प्रतिदिन थी जो 1984 में बढकर चार हजार आठ सौ टन हो गई। इसी गति से मिल की विनियोजित पूंजी की बिक्री तथा सकल लाभ भी बढते गए। बाद में 1972 में शारदा शुगर इंडस्ट्रीज के नाम से एक और मिल की स्थापना हुई। 1985 में चीनी और सीमेंट की बिक्री साठ करोड़ रूपये तथा लाभ बारह करोड़ से अधिक था। हिंदुस्तान शुगर मिल्स के निरंतर आधुनिकीकरण और विस्तार ने इसकी सफलता को और बढ़ाया। मुकुंद आयरन एंड स्टील वर्क्स बजाज समूह की तीसरी कंपनी थी जिसने बजाज के औद्यौगिक साम्राज्य को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका एवं साझेदारी निभायी। निजी क्षेत्र में आज मुकुंद आयरन के पास सबसे बड़ी स्टील फाउंड्री है। इस कंपनी के वर्तमान अध्यक्ष श्री जीवनलाल सुपुत्र श्री वीरेन शाह हैं जिन्होनें स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था तथा इस कंपनी के लिए प्रारंभिक दिनों में कड़ा परिश्रम किया था।

बजाज इलैक्ट्रिकल्स की स्थापना 1938 में हुई जिसकी भागीदारी दो कंपनियों में है मैचवेल इलैक्ट्रिकल्स (इंडिया) लि. और हिंद लैम्प लि.। बजाज इलैक्ट्रिकल्स करीबन 100 लघु ईकाईयों से उत्पाद खरीदता है जिन पर कंपनी का किस्म नियंत्रण रहता है। यह कंपनी समय-समय पर ग्राहकों के सुझावों को आमन्त्रित करती है तथा उनके सुझावों पर गंभीरतापूर्वक विचार करती है। इस कंपनी के प्रबंध की जिम्मेदारी 1980 से शेखर बजाज को सौंपी गई है। बजाज इलैक्ट्रिकल्स की 1980 में बिक्री सत्ताइस करोड़ थी जो 1985 में बढ़कर पचास करोड़ के लगभग आ गई थी। बजाज समूह आज नवीनतम टकनोलॉजी, कार्यकुशलता तथा व्यावसायिक नैतिकता के आधार पर प्रगति तथा विकास का पर्याय बन गया है। यह सब केवल एक महापुरूष के कारण संभव हो सका जिनका नाम जमनालाल बजाज था। जिनके गौरव से आज संपूर्ण राष्ट्र गौरवान्वित है।

बजाज घराने का वंशवृक्ष

वच्छाराम

जमनालाल (1889-1942)

कमलनयन 1915-1972			रामकृष्ण 1923	
राहुल	शिशर	शेखर	मधुर	नीरज
1938	1947	1948	1952	1954

अक्सर ऐसा होता है कि पूर्व पुरूष के साथ उसकी परंपरा समाप्त हो जाती है लेकिन जमनालाल बजाज के साथ ऐसा नहीं हुआ। जानकी देवी तो पति के रंग में रंगी ही थी, कमलनयन भी गांधीवादी संस्कार के थे। रामकृष्ण तो सत्याग्रही थे ही बेटियों में कमला जी तथा श्री मदालसा नारायण ने तो बहुत ही अनुशासित जीवन जिया। उमर छोटी थी किन्तु इसी वातावरण में पली पढ़ी जेल गई। जेल जीवन का अनुभव तो कमलनयन की पत्नी सावित्री देवी को भी हुआ था।

जानकी देवी तो जमनालाल जी की चिता पर सती हो जाने को तत्पर थी लेकिन गांधीजी ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। उन्होनें कहा - **तमाम दुगुणों को जला देना ही सच्चा सतीत्व है** और जानकी देवी ने अपना समस्त कृष्णार्पण कर दिया। विनोवाजी के भूदान यज्ञ के साथ उन्होनें कूपदान यज्ञ शुरू किया। खादी और गोसवा का व्रत जो उन्होनें जमनालाल जी के जीवनकाल में ही लिया था जीवन भर हर कठिन परिस्थिति में उसका निर्वहन किया। किसी भी तरह हिंसा और नकार के लिए उनके जीवन में स्थान न था। भारत सरकार ने उन्हें पदमविभूषण का अलंकार प्रदान कर स्वयं को सुशोभित किया था।

अपने व्यापार के बारे में जमनालाल ने अपने मृत्युपत्र में लिखा था 'मेरे बाद व्यापार कम कर दिया जावे अगर ठीक समझा जावे तो बंद कर दिया जावे' जिससे कम से कम इस प्रकार का जोखिम न होने पावे कि मेरे पू. दादाजी के नाम को व्यापारी रीति का बट्टा लग सके। मेरी यह प्रबल इच्छा रही है कि उनका नाम कम से कम जितना आज कायम है उतना तो रहे (अगर बढ़ नहीं सके तो)। जमनालाल के जाने के बाद व्यापार न बंद किया गया न कम, बल्कि उसे और बढ़ाया गया। यदि आज जमनालाल जी होते तो उन्हें यह देख कर अपार सुख होता कि उनके पुत्र पौत्रों ने अपने पिता व पितामह का नाम दिन दूना रात चौगुना बढ़ाया ही है। जिसके साथ महात्मागांधी का आर्शीवाद उनकी शिक्षा दीक्षा जुड़ी हो उसकी और कौन आंख उठाकर देख सकता है? किसी ने कहा है -

गांधी के मक्तब का सबक निराला देखा,
उसको छुट्टी न मिली जिसको सबक याद हुआ॥

डॉ. स्वराज्यमणि अग्रवाल

संक्षिप्त परिचय

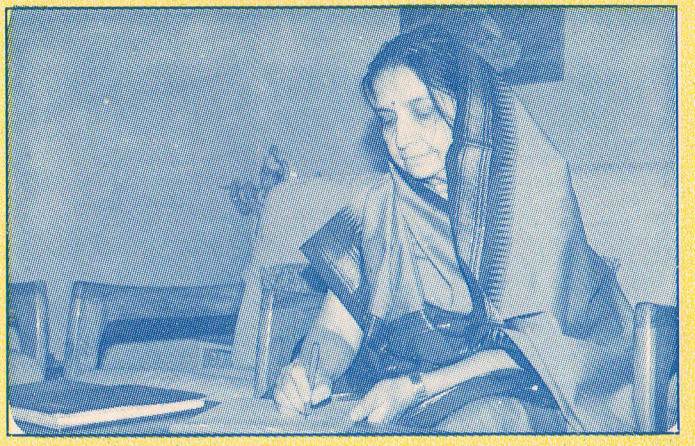

जन्म	:	8 जनवरी 1931 (प्रयाग)
मां का नाम	:	श्रीमती जग्गीदेवी
पिता का नाम	:	स्व. श्री गणेशप्रसाद अग्रवाल
पति का नाम	:	श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल, एम.ए., बी.काम एल एल.बी. साहित्यरत्न
परिवार	:	दो बेटे, एक बेटी, सभी विवाहित दो पौत्र, दो पोत्रियां।
शिक्षा	:	एम.ए. हिन्दी स्वर्ण पदक प्राप्त, एम.ए. संगीत (कोविद) प्रथम श्रेणी में द्वितीय स्थान प्राप्त (प्रयाग) मलिक मोहम्मद जापसी पर शोध, पी एच.डी. 1668।

सेवा सदस्यता :

रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, जुनिय चैम्बर में 1953 से लेकर 1985 तक विभिन्न सम्माननीय पदों पर आरूढ रहकर सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में करते हुए बेशुमार मान सम्मान, शील्ड, प्रमाण पत्र सोने चांदी के पदक प्राप्त किए। अखिल भारतीय सम्मेलन तथा अग्रोहा विकास ट्रस्ट में निरंतर छह वर्षो तक वरिष्ठ उपाध्यक्ष का कार्य सम्हाला। अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा के प्रत्येक अधिवेशनों में मुख्य अतिथि, मुख्यवक्ता के रूप में आमन्त्रित रहीं। जबलपुर में 1954-55 में स्थानीय अग्रवाल महिला संगठन की स्थापना की, जिसके अंतर्गत महिलाओं को सिलाई कढाई की नि:शुल्क शिक्षा दी जाती रही। शहर की अनेक संस्थाओं की उच्चतम पदवी पर रहकर कार्य किया। जबलपुर अग्रवाल सभा तथा मध्यप्रदेश अग्रवाल महासभा के संस्थापक अध्यक्ष (श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल) अपने पति के साथ बिना किसी पद के कार्य करती रही। अ.भा. महिला परिषद की स्थानीय शाखा के कोषाध्यक्ष पद का भार तीन वर्ष तक सम्हाला। सन् 1978 में अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल - जाति का इतिहास नामक शोधग्रंथ पर अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के तत्कालीन अध्यक्ष श्री रामप्रसाद पौद्दार ने सेंचुरी भवन में आपको सम्मानित करते

कृ.प.उ....

हुए रजत शील्ड प्रदान की । 1955 में प्रथम राष्ट्रीय रामप्रसाद पौद्दार पुरस्कार से आपको सुशोभित किया गया। अ.भा. अग्रवाल सम्मेलन ने ताम्र पत्र तथा अ.भा. अग्रवाल वैश्य महासभा द्वारा महिला रत्न की उपाधि प्रदान की गई। अग्रवाल रत्न की उपाधि भी उन्होनें ही प्रदान की। कोलकाता अग्रवाल सेवा समाज के रजत जयंती के अवसर पर आपको अग्र विद्या रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया।

लेखन -

लायन्स क्लब जूनियर चैम्बर की वार्षिक स्मारिकाओं का सफल संपादन किया। मध्यप्रदेश अग्रवाल महासभा की मासिक पत्रिका 'अग्रवाल दर्पण' का पांच वर्षो तक लगातार अपने पति के साथ मिलकर संपादन किया। एक उपन्यास लिखा जिस का नाम है 'मानिनी'। कविता, कहानी, समसामयिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक विषयों के अतिरिक्त देश की ज्वलंत समस्याओं पर अनेक लेख लिखे। योग पर तीन अंग्रेजी पुस्तकों का अनुवाद किया, जिसका प्रकाशन स्वामी शिवानंद योग विद्यालय मुंगेर द्वारा किया गया और जो अब तक हजारों की संख्या में बिक चुका है। The essence Tripitak अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद किया। विपश्ना गुरू श्री सत्यनारायण गोयन्का के आग्रह पर संक्षिप्त बुद्ध चरित्र (लगभग 300 पृष्ठों का) लिखकर उन्हें समर्पित किया, जो उनके द्वारा प्रकाशित हो रहा है।

अन्य विशेषताएं -

प्रारंभ से ही श्रेष्ठ वक्ता एवं मधुर गायिका के रूप में ख्याति अर्जित की। अ.भा. अग्रवाल सम्मेलन के मंच से राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने तथा उपस्थित जन समुदाय ने उनके छोटे से आभार प्रदर्शन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। तमिलनाडु के गवर्नर श्री सुखाड़िया जी ने उनके पांच मिनट के भाषण से प्रभावित हो उन्हें गवर्नर हाउस में आमंत्रित कर सम्मानित किया। अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा संचाजित रथ यात्रा में सर्वाधिक समय तक अग्रसेन रथ यात्रा का नेतृत्व सम्हाल कर अपनी मर्मस्पर्शी वाणी से समाज पर अपनी सहनशीलता तथा कार्यक्षमता की अमिट छाप छोड़ी तथा म.प्र. से अग्रोहा विकास ट्रस्ट की सभाओं की संबद्धता दिलाकर समाज में नया कीर्तिमान स्थापित किया। अभी तक अ.वि.ट्र. में इतनी अधिक संस्थाए देश के अन्य किसी प्रांत की नहीं जुड़ी हैं। अनेको बार मंच का संचालन, मास्टर आफ सेरेमनी जैसे कठिन कार्यो का अत्यंत सहजता तथा सुरूचि पूर्ण ढंग से निर्वाह किया तथा कवि सम्मेलनों एवम् अनेक साहित्यिक गोष्ठियों, सर्व धर्म सम्मेलनों जैसे मंचों की अध्यक्षता की।

उपसंहार - मृदुभाषी निरहंकारी, नम्र, करूणामयी, दानी, परोपकारी, सांस्कृतिक सद्गुणी समर्पित महिला के रूप में प्रतिष्ठित। पिछले दो वर्षो से स्वेच्छा से सम्पूर्ण पदों का त्याग कर गीताधाम में वानप्रस्थी जीवन व्यतीत करते हुए साधनारत हैं।

सम्पर्क सूत्र - जीवन कालोनी, बलदेव बाग
जबलपुर (म.प्र.)
फोन नं. 0761-518664